



सी.सी.आर.यू.एम.

न्यूजलेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका

खंड 42 • अंक 1

जनवरी-मार्च 2022

यूनानी दिवस समारोह और यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने 10-11 मार्च 2022 को शेर-ए-कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, श्रीनगर में यूनानी दिवस समारोह और यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। 'अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए यूनानी चिकित्सा में आहार और पोषण' पर आधारित यह सम्मेलन कश्मीर घाटी में अपनी तरह का पहला सम्मेलन था और वैज्ञानिक विचार-विमर्श के माध्यम से इसने बहुत अच्छा प्रभाव डाला।

श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय माननीय राज्य मंत्री, आयुष मंत्रालय और कैबिनेट मंत्री, आयुष मंत्रालय तथा पत्तन, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार विशिष्ट अतिथि थे। सम्मेलन में उप-विषयों अर्थात् 'आहार और पोषण - स्वास्थ्य क्षेत्र की



माननीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल 10 मार्च को श्रीनगर में आयोजित यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए।



10-11 मार्च 2022 को शेर-ए-कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, श्रीनगर में के.यू.चि.अ.प., आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रगान के दौरान मंच पर उपस्थित गणमान्य।

एक महत्वपूर्ण शाख', 'वैश्विक स्वास्थ्य के लिए यूनानी चिकित्सा', 'आहार और पोषण – रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार के लिए यूनानी चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण घटक', 'महामारी के दौरान सीखे गए सबक', 'अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण – सतत् विकास लक्ष्य-3 की प्राप्ति', 'गैर-संक्रामक रोगों (एनसीडी) के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धति' और 'स्वास्थ्य एवं कल्याण' पर एक पैनल चर्चा और आठ वैज्ञानिक सत्र आयोजित किये गए।

सम्मेलन में स्वास्थ्य विज्ञान जगत के बहुत से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों और दिग्गजों ने अपने ज्ञान, अनुभव और विशेषज्ञता को साझा किया। यूनानी चिकित्सा और संबंधित स्वास्थ्य विज्ञान के विकास में लगे उद्योग, अकादमिक और अनुसंधान संगठनों के हितधारकों ने बड़ी संख्या में भौतिक तथा आभासी रूप से सम्मेलन में भाग लिया।

यूनानी दिवस 11 फरवरी को हकीम अजमल खां की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। परंतु कोविड-19 महामारी के कारण इस वर्ष का यूनानी

दिवस समारोह 10-11 मार्च 2022 को मनाया गया।

उद्घाटन सत्र

श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय कैबिनेट मंत्री, आयुष मंत्रालय तथा पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार ने यूनानी दिवस समारोह और यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। **डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई कालूभाई**, माननीय राज्य मंत्री, आयुष मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि थे।

श्री प्रमोद कुमार पाठक, विशेष सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, **श्री विवेक भारद्वाज**, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर, **वैद्य जयंत देवपुजारी**, अध्यक्ष, राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग, नई दिल्ली, **प्रो. तलत अहमद**, कुलपति, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, **प्रो. अकबर मसूद**, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी, **प्रो.**

आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. और **डॉ. एम. ए. कासमी**, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय ने भी हाइब्रिड मोड में आयोजित इस सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए **श्री सर्बानंद सोनोवाल** ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत सरकार ने यूनानी चिकित्सा सहित भारतीय चिकित्सा पद्धति के बहुमुखी विकास को बहुत महत्व दिया है। उन्होंने आगे बताया कि श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व के कारण विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भारत में ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन स्थापित करने का निर्णय लिया है जो शोधकर्ताओं और छात्रों को पारंपरिक चिकित्सा में दुनिया का नेतृत्व करने का एक बड़ा अवसर प्रदान करेगा। यूनानी दिवस के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह दिवस हकीम अजमल खान की जयंती पर मनाया जाता है जो बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके और उन जैसे विद्वानों के योगदान के कारण ही यह व्यापक चिकित्सा प्रणाली हमें विरासत में मिली है। जम्मू और कश्मीर क्षेत्र के बारे में उन्होंने कहा कि हम सभी को इस खूबसूरत क्षेत्र पर गर्व है जो दुनिया भर में पर्यटकों के आकर्षण के रूप में खुद को स्थापित करने में सफल रहा है। उन्होंने आगे कहा कि जम्मू-कश्मीर पौधों के संसाधनों में समृद्ध है और मानव जाति को लाभान्वित करने के लिए उन्होंने इनके औषधीय उपयोग पर शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि आयुष



के.यू.चि.अ.प., आयुष मंत्रालय द्वारा शेर-ए-कश्मीर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, श्रीनगर में 10-11 मार्च 2022 को आयोजित यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रगान के दौरान दर्शकों का भव्य दृश्य।



माननीय मंत्री डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई कालूभाई

मंत्रालय ने हाल ही में क्षेत्रीय चिकित्सा का एक आयुष सेंटर ऑफ एक्सीलेंस विकसित करने के लिए 7 करोड़ से अधिक रुपये उपलब्ध कराए हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि जम्मू-कश्मीर के युवाओं को इस क्षेत्र में की जा रही सरकारी पहलों का लाभ उठाना चाहिए।

माननीय मंत्री डॉ. मुंजपरा महेंद्रभाई ने अपने संबोधन में कहा कि आहार बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऊर्जा का मूल स्रोत है। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी चिकित्सा स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारियों को रोकने के लिए स्वस्थ भोजन की आदतों के लिए विस्तृत दिशानिर्देश प्रदान करती है। उन्होंने दवाओं और औषधीय खाद्य पदार्थों के माध्यम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में आयुष प्रणाली की भूमिका की सराहना की। उन्होंने यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास में के.यू.चि.अ.प. के योगदान की भी सराहना की।

इस अवसर पर बोलते हुए



श्री प्रमोद कुमार पाठक

श्री प्रमोद कुमार पाठक ने कहा कि उचित और पौष्टिक आहार अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण की कुंजी है और यूनानी चिकित्सा में बीमारी का कारण बनने वाले असंतुलन को समायोजित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है। उन्होंने बताया कि आयुष मंत्रालय ने यूनानी चिकित्सा और अन्य आयुष प्रणालियों के



श्री विवेक भारद्वाज

माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रावधान और प्रचार हेतु माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की दृष्टि के एक भाग के रूप में गाज़ियाबाद में 200 बिस्तरों वाले अस्पताल सहित एक राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान की स्थापना की है।

श्री विवेक भारद्वाज ने कहा कि



डॉ. अतुल मोहन कोचर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एनएबीएच, नई दिल्ली प्रो. असिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. को क्षेत्रीय चिकित्सा, श्रीनगर के लिए एनएबीएच प्रत्यायन प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए।



वैद्य जयंत देवपुजारी



प्रो. तलत अहमद



प्रो. अकबर मसूद

यूनानी चिकित्सा जम्मू-कश्मीर में बहुत लोकप्रिय है और इसके अधिक प्रचार और विकास के लिए केंद्र सरकार क्षेत्र.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर में यूनानी चिकित्सा में एमडी और जम्मू-कश्मीर के पहले सरकारी यूनानी मेडिकल कॉलेज में बी.यू.एम.एस. की शुरुआत सहित अन्य ठोस प्रयास कर रही है।

वैद्य जयंत देवपुजारी ने कहा कि यूनानी चिकित्सा में शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए अरबी और उर्दू भाषाओं का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है जैसे आयुर्वेद के लिए संस्कृत का ज्ञान महत्वपूर्ण है, इसलिए भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए न्यूनतम मानकों में उपयुक्त बदलाव किए गए हैं और कॉलेजों को अरबी और उर्दू भाषाओं के लिए पूर्णकालिक शिक्षक नियुक्त करने के निर्देश दिए गए हैं।

प्रो. तलत अहमद ने यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास में क्षेत्र.यू.चि.अ.प. की भूमिका की सराहना की और यूनानी चिकित्सा में अंतःविषय अनुसंधान के लिए अन्य संस्थानों के साथ सहयोग का विस्तार करने का

आग्रह किया।

प्रो. अकबर मसूद ने यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान, स्वास्थ्य देखभाल वितरण और उच्च शिक्षा में क्षेत्र.यू.चि.अ.प. और क्षेत्र.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर के योगदान की सराहना की।

इससे पहले अपने स्वागत भाषण में प्रो. आसिम अली खान ने कहा कि माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों को अभूतपूर्व समर्थन और संरक्षण मिला है। उन्होंने उल्लेख किया कि पिछले सितंबर में माननीय आयुष मंत्री ने आयुष मंत्रालय से प्राप्त वित्तीय सहायता से जम्मू-कश्मीर में स्थापित पहले सरकारी यूनानी मेडिकल कॉलेज में बी.यू.एम.एस. पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। क्षेत्र.यू.चि.अ.प. की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में परिषद ने बहुआयामी विकास और प्रगति की है।

उद्घाटन सत्र का समापन डॉ. एम. ए. कासमी द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद

प्रस्ताव के साथ हुआ।

उद्घाटन सत्र में सम्मेलन स्मारिका सहित क्षेत्र.यू.चि.अ.प. द्वारा प्रकाशित आठ पुस्तकों, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् के तहत कार्यरत हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा विरासत संस्थान द्वारा विकसित दो यूनानी ई-पुस्तकों और क्षेत्र.यू.चि.अ.प. ऐप्स का विमोचन भी हुआ। क्षेत्र.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर को एनएबीएच प्रत्यायन प्रमाणपत्र की प्रस्तुति, अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली और आयुष निदेशालय, जम्मू-कश्मीर के बीच समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान, योग प्रशिक्षकों को सम्मानित करने के लिए वाईसीबी प्रमाणपत्रों का वितरण और जीवंत योग प्रदर्शन भी किया गया।

माननीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल द्वारा 'सिंगल यूनानी ड्रग्स', 'यूनानी ट्रीटमेंट गाइडलाइंस फॉर कॉमन डिजीजेज' और 'नो योर टेम्परमेंट' नामक ऐप लॉन्च करने की यूनानी और अन्य हितधारकों ने बहुत सराहना की



प्रो. आसिम अली खान

क्योंकि के.यू.चि.अ.प., आयुष मंत्रालय की ओर से यह यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी तरह की पहली पहल थी।

पैनल चर्चा सत्र

पैनल चर्चा 'आहार और पोषण: स्वास्थ्य क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण शाखा' विषय पर आयोजित की गई। प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., प्रो. अकबर मसूद, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी

और प्रो. मोहम्मद अफज़ल ज़रगर, कुलसचिव, कश्मीर केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रो. तलत अहमद, कुलपति, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, वैद्य देवेंद्र त्रिगुणा, अध्यक्ष, आयुर्वेद औषधि निर्माता संघ, नई दिल्ली, डॉ. एस. फारुक, अध्यक्ष, हिमालय ड्रग कंपनी, नई दिल्ली, डॉ. डब्ल्यू सेल्वामूर्ति, अध्यक्ष, एमिटी साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन फाउंडेशन और महानिदेशक एमिटी विज्ञान और नवाचार निदेशालय, नोएडा, श्री प्रदीप मुल्लानी, अध्यक्ष, पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, नई दिल्ली, डॉ. मो. अशरफ गनी, प्रोफेसर, एंडोक्राइनोलॉजी विभाग, शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़, श्रीनगर, प्रो. अब्दुल वदूद, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु, प्रो. के.एम.वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, प्रो. एम.सी. शर्मा, अध्यक्ष, वैज्ञानिक सलाहकार निकाय, भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषज संहिता आयोग, गाज़ियाबाद, डॉ. मोहन सिंह, निदेशक,

आयुष विभाग, जम्मू-कश्मीर और डॉ. संतोष जोशी, हमदर्द लेबोरेटरीज़ इंडिया ने वक्ता के तौर पर भाग लिया।

प्रो. आसिम अली खान ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में इस बात पर जोर दिया कि मधुमेह, हृदय रोग और डिस्टिपिडेमिया जैसे कई विकार सीधे आहार से संबंधित हैं और यूनानी चिकित्सा के आहार संबंधी नियमों का पालन करके इन्हें रोका जा सकता है।

श्री प्रदीप मुल्लानी ने कहा कि आहार और पोषण रोगों के उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी साहित्य में वर्णित कई आहार और औषधियां मोटापे सहित विभिन्न जीवनशैली विकारों को कम कर सकती हैं।

डॉ. डब्ल्यू सेल्वामूर्ति ने कहा कि यूनानी चिकित्सा साहित्य में आहार और पोषण की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की गई है और बताया कि असंगत आहार खिल्ट (मनोवृत्ति) की गुणवत्ता और मात्रा को बिगाड़ता है जो बीमारियों का कारण बनता है। उन्होंने दवा अल-कुरकुम के कैंसर विरोधी गुण पर भी चर्चा की।

डॉ. एस. फारुक ने रोग को बढ़ने से रोकने के लिए रोगियों द्वारा उचित आहार उपायों को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने यूनानी चिकित्सा में वर्णित विभिन्न खाद्य पदार्थों के स्वास्थ्य लाभों पर भी चर्चा की और बताया कि मूली बवासीर में उपयोगी है और खीरा गुर्दे के रोगों में लाभकारी है।

प्रो. तलत अहमद ने पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि यूनानी औषधियों पर और अधिक



माननीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल 10 मार्च 2022 को श्रीनगर में यूनानी चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान एक योग प्रशिक्षक को योग प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए।



डॉ. डब्ल्यू. सेत्वामूर्ति

शोध किया जाना चाहिए।

डॉ. संतोष जोशी, हमदर्द लेबोरेटरीज़ इंडिया ने कहा कि उचित आहार उपायों को अपनाकर विभिन्न बीमारियों के प्रसार को कम किया जा सकता है।

डॉ. एम. ए. वहीद ने कहा कि जौ का पानी हेमीप्लेजिया, पैराप्लेजिया और अन्य मस्तिष्क-वाहिकीय रोगों में उपयोगी है। उन्होंने यह भी कहा कि गिज़ा-ए-दवाई और दवा-ए-गिज़ाई (औषधीय खाद्य पदार्थ और खाद्य औषधि) के उपयोग के माध्यम से इम्यूनोमॉड्यूलेशन किया जा सकता है।

प्रो. एम.सी. शर्मा ने कई रोग स्थितियों में विभिन्न आहारों के उपयोग

के संबंध में अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि असंगत आहार कई बीमारियों विशेष रूप से ऑटोइम्यून विकारों में हानिकारक हो सकते हैं।

प्रो. के.एम.वाई. अमीन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि रोगियों और रोगों के स्वभाव के अनुसार आहार बताया जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि यूनानी आहार पर मोनोग्राफ तैयार किया जाना चाहिए।

प्रो. अब्दुल वदूद ने सुझाव दिया कि बीमारियों का इलाज करते समय इलाज बिल-गिज़ा (आहार चिकित्सा) को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्वस्थ व्यक्तियों को भी मौसम और स्वभाव के अनुसार आहार लेना चाहिए।

डॉ. मोहन सिंह ने उच्च रक्तचाप में लहसुन के उपयोग के बारे में अपना व्यक्तिगत अनुभव साझा किया।

प्रो. मोहम्मद अफज़ल ज़रगर ने भी आहार और पोषण के बारे में अपना अनुभव साझा किया।

प्रो. अकबर मसूद ने अपने विचारों और समापन टिप्पणियों के साथ सत्र

का समापन किया।

सत्र में मुख्य रूप से संगत और उचित आहार का उपयोग, उपचार के अन्य उपायों की तुलना में आहार चिकित्सा की प्राथमिकता, अस्बाब-ए-सित्ता ज़रुरीया (छह आवश्यक कारक) की भूमिका, अख़लात (मनोवृत्ति) और मिज़ाज (स्वभाव) का महत्व चर्चा का विषय रहा।

वैज्ञानिक सत्र-I

‘वैश्विक स्वास्थ्य के लिए यूनानी चिकित्सा’ पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-I में डॉ. मोहम्मद कामिल, महानिदेशक, लोटस होलिस्टिक हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, अबू धबी, संयुक्त अरब इमारात, डॉ. गोह चेंग सून, निदेशक, पारंपरिक और पूरक चिकित्सा, स्वास्थ्य मंत्रालय, मलेशिया, प्रो. अरमान ज़रगरान, समन्वयक, पारंपरिक चिकित्सा अंतर्राष्ट्रीय कार्य, स्वास्थ्य मंत्रालय और प्रोफेसर, फ़ारसी चिकित्सा संकाय, तेहरान आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, ईरान और डॉ. मुजीब हुसैन, समन्वयक, यूनानी तिब्ब, सामुदायिक और स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, वेस्टर्न केप विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका ने अपने संबोधन दिए। प्रो. अकबर मसूद, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी और प्रो. सुहैल फ़ातिमा, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. मोहम्मद कामिल ने ‘यूनानी चिकित्सा की गुणवत्ता और सुरक्षा – आज की एक वैश्विक और सख़्त आवश्यकता’ विषय पर अपने संबोधन में कहा कि हर्बल दवाओं के बढ़ते व्यावसायीकरण के कारण यूनानी औषधियों की गुणवत्ता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए



‘आहार और पोषण: स्वास्थ्य क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण शाखा’ पर पैनल चर्चा के दौरान माननीय अध्यक्षगण और पैनलिस्ट।



डॉ. मोहम्मद कामिल



डॉ. गोह चेंग सून



प्रो. अरमान ज़रगरान



डॉ. मुजीब हुसैन

कुछ गुणवत्ता नियंत्रण उपायों और मानकीकरण तकनीकों को स्थापित करने की आवश्यकता है।

डॉ. गोह चेंग सून ने 'मलेशिया में पारंपरिक और पूरक चिकित्सा का अभ्यास' पर अपने भाषण में सरकारी नीति और नियामक पहलुओं के साथ-साथ मलेशिया में पारंपरिक और पूरक चिकित्सा की स्थिति को प्रस्तुत किया।

प्रो. अरमान ज़रगरान ने 'ईरान में पारंपरिक चिकित्सा का वर्तमान परिदृश्य' पर अपनी प्रस्तुत दी और स्वास्थ्य चिकित्सा प्रणाली में यूनानी/फ़ारसी चिकित्सा के विकास और

एकीकरण के लिए सरकारी नीतियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोविड-19 महामारी के दौरान पारंपरिक चिकित्सा पर 100 से अधिक शोध परियोजनाएं चलाई गईं।

डॉ. मुजीब हुसैन ने 'दक्षिण अफ्रीका में यूनानी चिकित्सा के अवसर' के बारे में बात की और कहा कि वेस्टर्न केप विश्वविद्यालय में विभिन्न यूनानी उपचार जैसे कपिंग और हाइड्रोथेरेपी की सुविधा है और यूनानी चिकित्सकों को फार्माकोपिया के अनुसार अभ्यास करने की अनुमति है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय सहयोग विकसित करने, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

शुरू करने और अंतर-व्यावसायिक शिक्षा और अभ्यास के माध्यम से यूनानी चिकित्सा को बढ़ावा देने का लक्ष्य साधा है।

वैज्ञानिक सत्र-II

वैज्ञानिक सत्र-II में प्रो. डॉ. मोहम्मद अब्दुल मन्नान, पूर्व कुलपति, हमदर्द विश्वविद्यालय बांग्लादेश, डॉ. एस. एम. रईसुद्दीन, वरिष्ठ अध्यापक, स्वदेशी चिकित्सा संस्थान, कोलंबो विश्वविद्यालय, श्रीलंका, डॉ. सैफुल्लाह ख़ालिद आदमजी, प्रभारी, लाइसेंसिंग एवं चिकित्सा नीति, शारजाह स्वास्थ्य प्राधिकरण, शारजाह, संयुक्त अरब ईमारात और सुश्री उमेदाखोन युलदशेवा, सहायक प्राध्यापक, फार्माकोलॉजी विभाग एवं संकायध्यक्ष, दंत चिकित्सा संकाय, एविसेना ताजिक राज्य चिकित्सा विश्वविद्यालय, ताजकिस्तान ने वक्ता के रूप में भाग लिया। डॉ. मो. अशरफ ग़नी, प्राध्यापक, एंडोक्राइनोलॉजी विभाग, शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़, श्रीनगर, प्रो. नासिर अली ख़ान, प्रधानाचार्य, जामिया तिब्बिया देवबंद, सहारनपुर, डॉ. अनवर सईद, निदेशक, जामिया तिब्बिया देवबंद, सहारनपुर और डॉ. जी. वी. आर. जोसेफ़, निदेशक,



प्रो. अकबर मसूद, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी और प्रो. सुहैल फ़ातिमा, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली वैज्ञानिक सत्र-I की अध्यक्षता करते हुए।



डॉ. मोहम्मद अब्दुल मन्नान



डॉ. एस. एम. रईसुद्दीन



डॉ. सैफुल्लाह खालिद आदमजी



सुश्री उमेदाखोन युलदाशेवा

होम्योपैथिक भेषजकोषीय प्रयोगशाला, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने सत्र की अध्यक्षता की।

डॉ. मोहम्मद अब्दुल मन्नान ने बांग्लादेश के सभी नागरिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण और उचित स्वास्थ्य सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिए एलोपैथिक उपचार के साथ-साथ पूरे देश में यूनानी, आयुर्वेद और होम्योपैथिक चिकित्सा सेवाओं को बढ़ाने के लिए बांग्लादेश की नीति को साझा किया।

डॉ. एस. एम. रईसुद्दीन ने सोरायसिस, म्यूकोसल डोमिनेंट पेम्फिगस वल्गरिस और हर्सुटिज्म के उपचार में आहार में परिवर्तन के प्रभावों के बारे में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि

यूनानी चिकित्सकों ने हमेशा आहार पर बहुत जोर दिया है।

डॉ. सैफुल्लाह खालिद आदमजी ने संयुक्त अरब ईमारात में पारंपरिक चिकित्सा की स्थिति प्रस्तुत की और यूनानी औषधीय उत्पादों के विकास और पंजीकरण के लिए एक व्यापक नीति एवं कानून लाने की आवश्यकता पर बल दिया।

सुश्री उमेदाखोन युलदाशेवा ने 'ताजकिस्तान के औषधीय पौधों के मधुमेहरोधी प्रभावों का अध्ययन' पर अपनी प्रस्तुति दी और कहा कि परीक्षण औषधि बहुत प्रभावी पाई गई। उन्होंने बताया कि ताजकिस्तान में कुछ औषधीय जड़ी-बूटियों पर बहुत सारे शोध कार्य

किए गए हैं जिनमें शरीर की विभिन्न प्रणालियों पर उनका निश्चित प्रभाव देखा गया।

सत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार और अच्छे स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए यूनानी चिकित्सा को अपनाने की वकालत की गई।

वैज्ञानिक सत्र-III

'आहार और पोषण - यूनानी चिकित्सा में रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण घटक' पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-III में प्रो. हकीम सैयद जिल्लुर रहमान, संस्थापक अध्यक्ष, इब्न सिना मध्यकालीन चिकित्सा और विज्ञान अकादमी, अलीगढ़, प्रो. शाहुल हमीद, प्रधानाचार्य, मरकज़ यूनानी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, कोझीकोड, केरल, डॉ. अल्ताफ़ हुसैन शाह, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, आयुष, जम्मू-कश्मीर, डॉ. वहीदुल हसन, नोडल अधिकारी, जम्मू-कश्मीर औषधीय पादप बोर्ड और डॉ. हिलाल अहमद पुनू, एसोसिएट प्रोफेसर, खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर द्वारा पांच संबोधन दिये गए। प्रो. रईस ए. कादरी, अध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी विभाग और डॉ. राबिया



'वैश्विक स्वास्थ्य के लिए यूनानी चिकित्सा' पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-II के अध्यक्ष और प्रतिवेदक।



प्रो. हकीम सैयद ज़िल्लुर रहमान

हामिद, अध्यक्ष, अतिसूक्ष्म प्रौद्योगिकी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रो. हकीम सैयद ज़िल्लुर रहमान ने यूनानी चिकित्सा में आहार और पोषण की ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रस्तुत की। उन्होंने आहार और पोषण के क्षेत्र में विभिन्न यूनानी चिकित्सकों के योगदान के बारे में भी बात की।

प्रो. शाहुल हमीद ने यकृत-सुरक्षात्मक आहार और पोषण के बारे में बात की। उन्होंने यूनानी चिकित्सा में



प्रो. शाहुल हमीद

यकृत-सुरक्षात्मक कार्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थों और दवाओं और उनके रासायनिक घटकों पर चर्चा की।

डॉ. अल्ताफ़ हुसैन शाह ने इलाज बिल-गिज़ा (आहार चिकित्सा) के बारे में विस्तार से बताया और इसके सामान्य सिद्धांतों तथा स्वास्थ्य वर्धन और रखरखाव के साथ-साथ रोगों के उपचार में इसके महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कुछ यूनानी संशोधित आहारों के बारे में भी बात की जो कुछ चयापचय विकारों

में एक निवारक उपाय के साथ-साथ चिकित्सीय सहायता के रूप में काम करते हैं।

डॉ. वहीदुल हसन ने स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा के लिए कश्मीर घाटी में औषधीय पौधों पर ध्यान केंद्रित किया और बताया कि जम्मू-कश्मीर में औषधीय पौधों की 5000 प्रजातियां हैं और हर्बल उद्योग में उपयोग किए जाने वाले लगभग 60% औषधीय पौधे जम्मू-कश्मीर में पाए जाते हैं। उन्होंने कुछ ऐसे पौधों के बारे में चर्चा की जो औषधीय महत्व रखते हैं और जिनका उपयोग आहार के रूप में और इम्यूनोमॉड्यूलेशन के लिए भी किया जाता है।

डॉ. हिलाल अहमद पुनू ने न्यूट्रास्युटिकल्स में हाल की प्रगति के बारे में बात की और दूध, मांस, मछली के तेल, सरसों, फल, सब्जियों, चाय, सोयाबीन, कोको, चॉकलेट, आदि कुछ पौष्टिक-औषधीय पदार्थों के स्रोतों, उनके संभावित लाभों और मंडी में उपलब्ध पौष्टिक-औषधीय पदार्थों का उल्लेख किया।

वैज्ञानिक सत्र-IV

वैज्ञानिक सत्र-IV में प्रो. मो. अनवर, अध्यक्ष, इलाज बिल-तदबीर विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, डॉ. मारिया अमीन कुरैशी, सहायक प्राध्यापक, सामाजिक और निवारक चिकित्सा विभाग, सरकारी मेडिकल कॉलेज, श्रीनगर, प्रो. गीर मोहम्मद इस्हाक, फार्मास्युटिकल विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, डॉ. शब्बीर अहमद पारे, चिकित्सा अधिकारी, आयुष विभाग, जम्मू-कश्मीर



प्रो. रईस ए. क़ादरी और डॉ. राबिया हामिद, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर वैज्ञानिक सत्र-III की अध्यक्षता करते हुए।

और डॉ. ख़ालिद ज़फ़र मसूदी, सहायक प्राध्यापक, प्लांट बायोटेक्नोलॉजी विभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कश्मीर, श्रीनगर ने — ‘आहार और पोषण — यूनानी चिकित्सा में रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण घटक’ पर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

डॉ. नवीद नज़ीर शाह, अध्यक्ष, चेस्ट मेडिसिन, सीडी अस्पताल, श्रीनगर और डॉ. मोहम्मद फारुक नक्शबंदी, चिकित्सा अधीक्षक, सरकारी यूनानी अस्पताल, श्रीनगर ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रो. मो. अनवर ने ‘यूनानी डायटेटिक्स के संदर्भ में मेटाबोलिक सिंड्रोम के उपचार का समग्र दृष्टिकोण’ पर ऑनलाइन प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि *इलाज बिल-तदबीर असबाब-ए-सित्ता ज़रूरीया* में संतुलन और परिवर्तन के माध्यम से उचित आहार प्रबंधन और जीवन शैली में बदलाव के रूप में एक बेहतर समाधान प्रदान कर सकता है।

डॉ. मारिया अमीन कुरैशी ने ‘कोविड के समय में आहार का महत्व’ पर बात की और कहा कि ‘कोई भी खाद्य पदार्थ

या पूरक आहार कोविड-19 संक्रमण को नहीं रोक सकता है लेकिन लगातार स्वस्थ आहार लेकर हम बीमारी से लड़ने के लिए अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत रख सकते हैं’।

प्रो. गीर मोहम्मद इस्हाक ने यूनानी चिकित्सा, पोषण और आहार के माध्यम से (*कुव्वत-ए-मुदाफ़अत*) रोग प्रतिरक्षा में सुधार पर अपनी प्रस्तुति दी और *असबाब-ए-सित्ता ज़रूरीया* (छह आवश्यक कारक), *अनासिर-ए-अरबा* (चार तत्व) और *अख़लात-ए-अरबा* (चार मनोवृत्ति) की भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न दवाओं के इम्यूनोमॉड्यूलेटरी प्रभावों का विस्तार से वर्णन किया।

यूनानी चिकित्सा में उपचार की एक महत्वपूर्ण विधि *‘इलाज बिल-ग़िज़ा’* की भूमिका पर अपनी प्रस्तुति में डॉ. शब्बीर अहमद पारे ने ग़िज़ा की आवश्यकता, ग़िज़ा के वर्गीकरण के पीछे सिद्धांत और दो रोगों मोटापा और तपेदिक के उदाहरणों के साथ सामान्य सिद्धांतों पर चर्चा की। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि ग़िज़ा निवारक, स्वास्थ्यवर्धक

के प्रोत्साहक और उपचारात्मक हो सकती है।

डॉ. ख़ालिद ज़फ़र मसूदी ने ‘आहार गुण युक्त औषधीय पौधे — एक साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण’ पर अपनी प्रस्तुति दी जिसमें उन्होंने कहा कि खान-पान की आदतों में लगातार बदलाव से मधुमेह और मोटापे जैसी विभिन्न बीमारियां हो सकती हैं। उन्होंने प्रोस्टेट कैंसर और इसके विरुद्ध पुरानी थेरेपी में बदलाव, जीन की खोज और दवा की खोज के बारे में भी बात की।

वैज्ञानिक सत्र-V

वैज्ञानिक सत्र-V ‘महामारी के दौरान सीखे गए सबक’ के विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. मोहन सिंह, निदेशक, भारतीय चिकित्सा प्रणाली (आयुष), जम्मू-कश्मीर और प्रो. इरशाद ए. नवचू, अध्यक्ष रिसर्च, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने की। प्रो. इमामुद्दीन अहमद, पूर्व प्रधानाचार्य, सरकारी यूनानी चिकित्सा कॉलेज, चेन्नई, डॉ. यासिर अहमद राथर, प्रोफेसर, सरकारी मनोरोग अस्पताल, श्रीनगर, डॉ. मुश्ताक अहमद, मंडलीय नोडल अधिकारी, आयुष स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र, कश्मीर मंडल और डॉ. इफ्तिखार हुसैन गाज़ी, चिकित्सा अधीक्षक, कश्मीर तिब्बिया कॉलेज, अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, सुंबुल, जम्मू-कश्मीर सत्र के वक्ता थे। सत्र में कोविड-19 के उपचार में आहार, पोषण, यूनानी दवाओं और आयुष हस्तक्षेपों पर चर्चा की गई। सत्र के दौरान ‘कोविड-19 के बाद की जटिलताएं और यूनानी चिकित्सा में उनकी देखभाल’, ‘कोविड-19 के



‘आहार और पोषण— रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार के लिए यूनानी चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण घटक’ पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-IV के अध्यक्ष और वक्ता।



‘महामारी के दौरान सीखे गए सबक’ विषय पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-V के अध्यक्ष और वक्ता।

दौरान और बाद में मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल’, ‘कोविड-19 के उपचार में इलाज बिल-गिज़ा की भूमिका’ और ‘कोविड-19 के उपचार में आयुष हस्तक्षेप – ज़मीनी अनुभव’ विषयों पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने विशेष रूप से गैर-संचारी और जीवन शैली विकारों से बचने के लिए संगत और उचित आहार के उपयोग पर जोर दिया। कुछ वक्ताओं ने स्वास्थ्य के रखरखाव और बीमारियों की रोकथाम में जीवन के छह आवश्यक कारकों (असबाब-ए-सित्ता ज़रूरीया) के महत्व पर प्रकाश डाला।

वैज्ञानिक सत्र-VI

‘अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण सतत् विकास लक्ष्य-3 की प्राप्ति’ पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-VI की अध्यक्षता प्रो. गीर मोहम्मद इस्हाक, औषधि विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर और डॉ. मंजूर शाह, प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने की। डॉ. पूनम शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, एस.के.यू.ए.एस.टी.-कश्मीर, श्रीनगर और

डॉ. एजाज़ हसन गनी, वनस्पति विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, कारगिल कैंपस, लद्दाख ने ‘स्वास्थ्य रक्षण में पोषण की भूमिका’ और ‘कश्मीर हिमालय के पारंपरिक औषधीय पौधे – विविधता और संभावनाएं’ पर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।

डॉ. पूनम शर्मा ने शरीर के विकास में पोषण (प्रोटीन, विटामिन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, आदि) की भूमिका पर चर्चा की और मधुमेह, मोटापा और हृदय रोगों जैसी कुछ बीमारियों की रोक-थाम और

संक्रमण के प्रतिरोध इसके योगदान के बारे में बताया।

डॉ. एजाज़ हसन गनी ने कश्मीर हिमालय में पाये जाने वाले औषधीय और साँस की बिमारियों में उपयोगी औषधीय गुणों वाले फलों और पौधों से बने कुछ आहार जैसे कहवा, खंबीर, अर्क-ए-बनफशा, मुरब्बा बेही, आदि के बारे में जानकारी साझा की।

वैज्ञानिक सत्र-VII

वैज्ञानिक सत्र-VII का विषय ‘गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के लिए पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली’ था जिसकी अध्यक्षता प्रो. जुल्फिकार अली भट्ट, पूर्व अध्यक्ष, औषधि विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर और प्रो. मुबशिशर हुसैन मसूदी, अध्यक्ष, औषधि विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने की। प्रो. मो. इदरीस, आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, नई दिल्ली, डॉ. इनामुल हक, सहायक प्राध्यापक, सरकारी मेडिकल कॉलेज, श्रीनगर, डॉ.



प्रो. गीर मोहम्मद इस्हाक और डॉ. मंजूर शाह, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर वैज्ञानिक सत्र-VI की अध्यक्षता करते हुए।

इरफान बंदे, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी (यूनानी), आयुष निदेशालय, जम्मू-कश्मीर और **प्रो. एस. एम. आरिफ़ जैदी**, संकायध्यक्ष, यूनानी चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संकाय, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली सत्र के वक्ता थे।

‘कोविड-19 महामारी के दौरान अनुभव का आदान-प्रदान’ पर अपनी प्रस्तुति में **प्रो. मो. इदरीस** ने 1918 में इन्फ्लुएंजा की महामारी से निपटने में अपने कॉलेज की भूमिका और कोविड-19 महामारी से निपटने के अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर चर्चा की। उन्होंने कोविड-19 के बाद के कुछ दीर्घकालिक और सामान्य लक्षणों जैसे थकान, सांस की तकलीफ और संज्ञानात्मक शिथिलता पर भी चर्चा की।

डॉ. इनामुल हक ने ‘पर्यावरण जोखिम और गैर-संचारी रोग’ पर संबोधन दिया। उन्होंने गैर-संचारी रोगों के विभिन्न जोखिम कारकों पर चर्चा की और कहा कि वैश्विक स्तर पर 23 प्रतिशत मौतें पर्यावरणीय जोखिम कारकों से जुड़ी हैं, 15 प्रतिशत इस्केमिक हृदय रोग घरेलू वायु प्रदूषण के कारण होते हैं,

अन्य 15 प्रतिशत परिवेशी वायु प्रदूषण के कारण और 3 प्रतिशत तथा 2 प्रतिशत सेकेंड हैंड तंबाकू के धुआं और सीसा से जुड़े हैं। उन्होंने एनसीडी के पर्यावरणीय जोखिमों को कम करने के हस्तक्षेपों के उदाहरणों के साथ अपना सम्बोधन समाप्त किया।

डॉ. इरफान बंदे ने ‘एनसीडी का मुकाबला करने में यूनानी चिकित्सा की भूमिका’ पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने यूनानी चिकित्सा के निवारक उपायों को प्रस्तुत किया और एबीसीडीई रणनीति पर जोर दिया जिसका अर्थात है कि शराब से बचें, शारीरिक रूप से सक्रिय रहें, नमक और चीनी के सेवन में कटौती करें, तंबाकू उत्पादों का उपयोग न करें और अधिक मात्रा में सब्जियां और फल खाएं।

प्रो. एस. एम. आरिफ़ जैदी ने ‘चयापचय संबंधी विकारों में आहार संबंधी सिफारिशें’ पर अपनी प्रस्तुति में कुपोषण और चयापचय संबंधी विकारों के बारे में जानकारी दी और इनके उपचार में आहार की भूमिका को प्रस्तुत किया। उन्होंने अच्छे स्वास्थ्य और जीवन शैली

के घटकों के बारे में भी बताया जिन्हें पौष्टिक आहार, शारीरिक गतिविधि, व्यवहार में बदलाव आदि के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है।

वैज्ञानिक सत्र-VIII

‘स्वास्थ्य और कल्याण’ पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-VIII की अध्यक्षता **प्रो. गीर मोहम्मद इस्हाक**, औषधि विज्ञान विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर और **प्रो. बशीर गनी**, पूर्व निदेशक, सीओआरडी, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर ने की। **डॉ. एस. एम. सलीम खान**, सामाजिक और निवारक चिकित्सा विभाग, सरकारी मेडिकल कॉलेज, श्रीनगर, **प्रो. एफ. एस. शेराणी**, संकायध्यक्ष, अजमल खान तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, **डॉ. शाज़िया बंदे**, चिकित्सा अधिकारी, आयुष निदेशालय, जम्मू-कश्मीर और **डॉ. शाज़िया नूर**, प्रधानाचार्य, कश्मीर तिब्बिया कॉलेज, अस्पताल और अनुसंधान केंद्र, सुंबुल, जम्मू-कश्मीर सत्र की वक्ता थीं। उन्होंने क्रमशः ‘स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए निवारक चिकित्सा’, ‘आधुनिक परिप्रेक्ष्य में असबाब-ए-सित्ता ज़रूरीया’, ‘सामान्य कल्याण के लिए यूनानी चिकित्सा’ और ‘कश्मीर में यूनानी चिकित्सा में चिकित्सा पर्यटन की संभावनाएं’ पर अपना संबोधन दिया।

डॉ. एस. एम. सलीम खान ने अच्छे स्वास्थ्य के रखरखाव और विभिन्न प्रकार की रोकथाम की अवधारणा को समझाया। उन्होंने स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य परामर्श द्वारा भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने की



‘गैर-संक्रामक रोगों हेतु पारंपरिक चिकित्सा पद्धति’ विषय पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-VII के अध्यक्ष और वक्ता।



‘स्वास्थ्य एवं कल्याण’ विषय पर आधारित वैज्ञानिक सत्र-VIII के अध्यक्ष और वक्ता।

आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. एफ. एस. शेरानी ने अस्वा-
ए-सिता ज़रूरीया के संदर्भ में भावनात्मक
समझ की प्रासंगिकता पर चर्चा की और
बीमारी के इलाज के लिए क्लिनिक
में डॉक्टर-रोगी संबंधों के साथ-साथ

समग्र दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया।

डॉ. शाज़िया बंदे ने कहा कि यूनानी
चिकित्सा एक व्यापक चिकित्सा प्रणाली
है जो सामान्य स्वास्थ्य के लिए समग्र
दृष्टिकोण के साथ स्वास्थ्य वर्धक,
प्रोत्साहक, निवारक, उपचारात्मक और

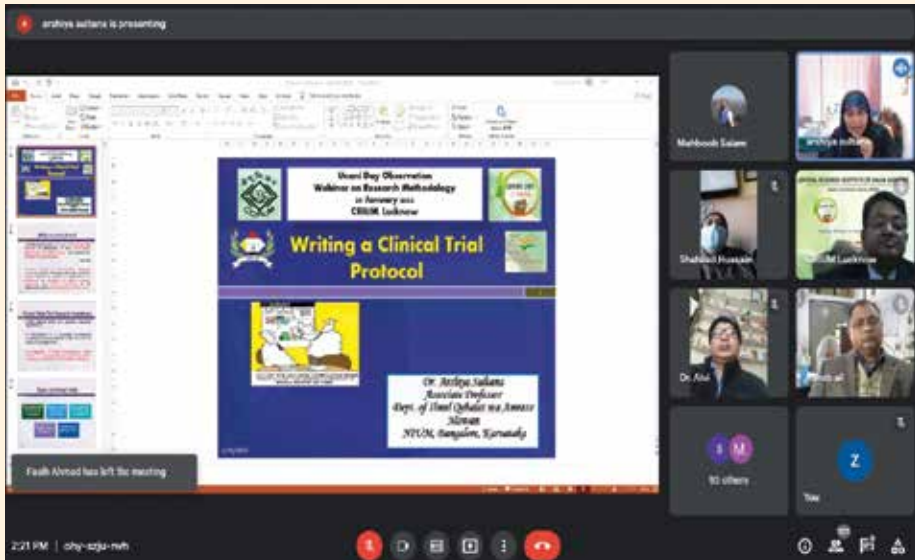
पुनर्वास स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान
करती है और प्रत्येक व्यक्ति को उसके
पर्यावरण के संबंध में देखती है और
शरीर, मन तथा आत्मा के स्वास्थ्य पर
जोर देती है।

डॉ. शाज़िया नूर ने कहा कि कश्मीर
धरती का स्वर्ग है और यहां यूनानी
चिकित्सा अभ्यास की समृद्ध परंपरा है।
उन्होंने कहा कि प्राकृतिक सुंदरता के
साथ कश्मीर में हरे भरे घास के मैदानों
और बहते जल संसाधनों के साथ मध्यम
तापमान है जो एक मरीज को स्वस्थ
महसूस करने के लिए एक प्राकृतिक
वातावरण प्रदान करते हैं। उन्होंने आगे
कहा कि घाटी में यूनानी चिकित्सा
पर्यटन की काफी संभावनाएं हैं।



कै.यू.चि.अ.सं., लखनऊ में अनुसंधान पद्धति पर वेबिनार का आयोजन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (कै.यू.चि.अ.सं.), लखनऊ
ने यूनानी दिवस 2022 के उपलक्ष्य पर पूर्व गतविधि के रूप में 20
जनवरी 2022 को ‘अनुसंधान पद्धति’ पर एक वेबिनार का आयोजन किया।



डॉ. अर्शिया सुल्ताना, एसोसिएट
प्रोफेसर, इल्मुल क् बालत व
अमराज-ए-निस्वां, राष्ट्रीय यूनानी
चिकित्सा संस्थान (रा.यू.चि.सं.),
बेंगलुरु ने ‘नैदानिक परीक्षण प्रोटोकॉल
लेखन’ पर एक विस्तृत व्याख्यान
दिया। डॉ. वहाब अली, वैज्ञानिक-जी,
आईसीएमआर-राजेन्द्र स्मारक चिकित्सा
विज्ञान अनुसंधान संस्थान, पटना ने
अपनी प्रस्तुति में ‘अनुसंधान और प्रकाशन
में नैतिकता’ पर व्याख्यान दिया।

वेबिनार का शुभारंभ डॉ. मोहम्मद
नफीस खान, उप-निदेशक, कै.यू.चि.अ.सं.,
लखनऊ के आरंभिक संबोधन के साथ
हुआ। डॉ. महबूबुस सलाम ने कार्यवाही
का संचालन किया और डॉ. नजमुस
सेहर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
वेबिनार में 100 से अधिक प्रतिभागियों
ने भाग लिया।



कै.यू.चि.अ.प. ने औषधि, उपचार और स्वभाव पर ऐप्स विकसित किया

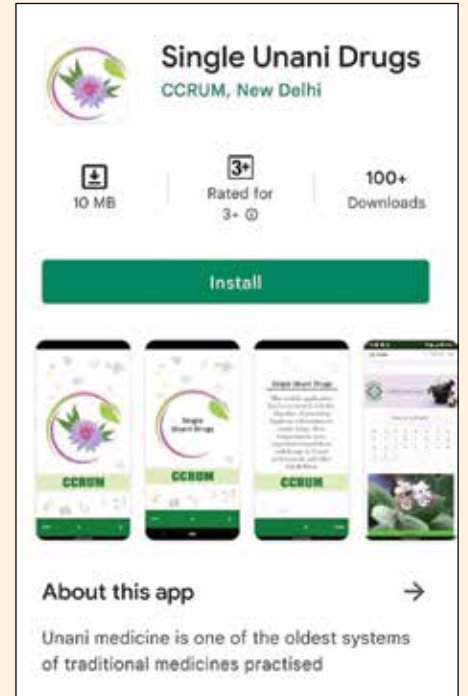
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (कै.यू.चि.अ.प.) ने हाल में यूनानी चिकित्सकों और अन्य हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी को सुविधाजनक रखने हेतु एकल यूनानी औषधियों, उपचार दिशानिर्देशों और स्वभाव (मिज़ाज) पर तीन एप्लिकेशन्स विकसित किए। ये ऐप्स 10 मार्च 2022 को शेर-ए-कश्मीर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, श्रीनगर में यूनानी दिवस समारोह और यूनानी चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान लॉन्च किए गए।

‘यूनानी एकल औषधि’ नामक पहले मोबाइल ऐप में यूनानी चिकित्सा की एकल औषधियों का विवरण है। चूंकि उपचार के लिए औषधियों का चयन उनके स्वभाव, कार्यों और रोग के प्रकार को ध्यान में रख कर किया जाता है, इसलिए इस ऐप में औषधियों के स्वभाव, उपयोग, महत्वपूर्ण मिश्रण और खुराक से संबंधित जानकारी शामिल की गई है।

दूसरा ऐप ‘सामान्य रोगों हेतु मानक यूनानी उपचार दिशानिर्देश’ पर आधारित

है जोकि दो खंडों में कै.यू.चि.अ.प. का एक प्रकाशन है। यह नैदानिक अभ्यास के दौरान एक चिकित्सक के सामने आने वाले सामान्य रोगों के उपचार से संबंधित जानकारी प्रदान करता है। इसमें उपचार के सिद्धांत, एकल और मिश्रित औषधियों के माध्यम से औषधीय उपचार, संघटित थेरेपी, आहार संबंधी सुझाव और रोग से संबंधित निवारकों/सावधानियों का विवरण शामिल है।

‘अपने स्वभाव को जानें’ नामक वेब-आधारित ऐप स्वभाव (मिज़ाज) के आकलन के लिए एक उपकरण है जो यूनानी चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। एक साधारण प्रश्नोत्तरी के माध्यम से यह ऐप मनुष्य के स्वस्थ स्वभाव को बनाए रखने और औषधियों तथा विपरीत स्वभाव के आहार का उपयोग करके असामान्य स्वभाव को सामान्य बनाने के लिए उचित आहार की पहचान करने की सुविधा प्रदान करता है।



दोनों मोबाइल ऐप गूगल प्ले स्टोर और ऐपल प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं जबकि वेब-आधारित ऐप <https://unanitemperament.ccrumapps.in> से उपयोग किया जा सकता है।



बौद्धिक संपदा अधिकारों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई में बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) पर 30 मार्च 2022 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रो. मोहम्मद अफ़शार आलम, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी को संबोधित किया।

खान ने कहा कि यह बौद्धिक संपदा अधिकारों के बारे में शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और अन्य हितधारकों को प्रशिक्षित करने के हमारे प्रयासों की एक कड़ी है। उन्होंने बताया कि के.यू.चि.अ.प. ने पहले ही अपने बौद्धिक संपदा अधिकारों पर 17 पेटेंट प्राप्त कर लिए हैं और अधिक पेटेंट प्राप्ति की कोशिश जारी है।

श्री एस थंगापांडियन, उप नियंत्रक,



30 मार्च 2022 को 'बौद्धिक संपदा अधिकारों' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रगान के दौरान विशिष्ट वक्ता।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. मोहम्मद अफ़शार आलम ने कहा कि 'भारत में यूनानी चिकित्सा अच्छी तरह फल-फूल रही है और यह संतोषजनक है कि हम इस चिकित्सा प्रणाली के विकास में भागीदार हैं। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास के लिए के.यू.चि.अ.प. सर्वोच्च निकाय है और हमने इस क्षेत्र में अपना योगदान देने के लिए के.यू.चि.अ.प. के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। आईपीआर के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान की प्रगति और आर्थिक समृद्धि के लिए आईपीआर का निर्माण बहुत महत्वपूर्ण है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि भारत सरकार माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी

के सक्रिय नेतृत्व में यूनानी चिकित्सा तथा अन्य भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के बहुआयामी विकास के लिए लगातार संरक्षण और निधि प्रदान कर रही है। प्रो. खान ने बताया कि के.यू.चि.अ.प. यूनानी चिकित्सा के अनुसंधान, प्रशिक्षण और अभ्यास के लिए मानक स्थापित करने के लिए ठोस प्रयास कर रही है और राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और क्षे.यू.चि.अ.सं., श्रीनगर के लिए एनएबीएच मान्यता प्राप्त कर ली है, जबकि के.यू.चि.अ.प. के अंतर्गत अन्य स्वास्थ्य संस्थानों की एनएबीएच मान्यता के लिए प्रयास जारी हैं। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने आयुष मंत्रालय के सहयोग से यूनानी चिकित्सा में प्रशिक्षण और अभ्यास के लिए हाल ही में डब्ल्यूएचओ बेंचमार्क प्रकाशित किये हैं।

संगोष्ठी के बारे में बोलते हुए प्रो.

पेटेंट और डिज़ाइन, भारतीय पेटेंट कार्यालय, चेन्नई और प्रो. अब्दुल वदूद, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया।

इससे पहले डॉ. एन. ज़हीर अहमद, उप निदेशक, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई ने स्वागत भाषण दिया और संगोष्ठी की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में पैनल चर्चा सहित तीन तकनीकी सत्र थे जिनमें प्रख्यात वक्ताओं ने हर्बल दवाओं और उत्पादों के विशेष संदर्भ में बौद्धिक संपदा अधिकारों को व्यक्त किया।

देश के विभिन्न भागों से वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, छात्रों और प्रतिनिधियों के साथ-साथ क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई और के.यू.चि.अ.प. मुख्यालय के शोधकर्ताओं ने संगोष्ठी में भाग लिया।

महानिदेशक, कें.यू.चि.अ.प. का पारंपरिक चिकित्सा पर कार्यक्रम में सम्बोधन

प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (कें.यू.चि.अ.प.) ने एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा, उत्तर प्रदेश द्वारा 21-25 फरवरी 2022 के दौरान 'सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य देखभाल हेतु पारंपरिक चिकित्सा-आधुनिक दृष्टिकोण' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य भाषण दिया।



प्रो. आसिम अली खान

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन बोलते हुए प्रो. आसिम अली खान ने कहा कि पारंपरिक चिकित्सा और एलोपैथिक चिकित्सा पर आधारित एकीकृत स्वास्थ्य सेवा दृष्टिकोण उभरती स्वास्थ्य चुनौतियों की रोकथाम और उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। प्रो. खान ने आगे कहा कि एकीकृत दृष्टिकोण कोविड-19 महामारी से निपटने और इस विषय पर शोध गतिविधियों को अंजाम देने में बहुत मददगार साबित हुआ। विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रो. खान ने कहा कि स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली में

हमारी पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली की क्षमता के एकीकरण के आधार पर एक समावेशी दृष्टिकोण स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान के लिए संभावित विकल्प है। 'यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी: भारतीय बुनयादों का पुनरुद्धार' पर पैनल चर्चा सत्र में बोलते हुए प्रो. खान ने कहा कि यूनानी चिकित्सा ने भारत में प्रमुख प्रगति की है और भारतीय भू-मानव पर्यावरण में अपने सिद्धांतों को सफलतापूर्वक लागू किया है जिससे यह प्रणाली एक प्रभावी और लोकप्रचलित चिकित्सा पद्धति के रूप में उभर सकी और राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा वितरण का

एक एकीकृत हिस्सा बन सकी। उन्होंने आगे कहा कि शैक्षिक, स्वास्थ्य देखभाल और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के सबसे बड़े नेटवर्क के कारण भारत यूनानी चिकित्सा में विश्व अग्रणी है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार ने 'सरकारी क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों के प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम' के तहत इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रायोजित किया था।



स्वास्थ्य देखभाल मानकों पर वेबिनार

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), नई दिल्ली ने 21 जनवरी 2022 को यूनानी दिवस 2022 की पूर्व गतिविधियों के भाग के रूप में 'स्वास्थ्य देखभाल मानकों' पर एक वेबिनार का आयोजन किया।

डॉ. वन्दना सिरोहा, उप निदेशक, अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं हेतु राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएच) और डॉ. मुनव्वर काजमी, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा

अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 'यूनानी चिकित्सा में स्वास्थ्य देखभाल मानक और प्रत्यायन' पर अपना व्याख्यान दिया। वेबिनार का आरंभ डॉ. राहत रज़ा, उप निदेशक, क्षे.यू.चि.अ.सं., नई दिल्ली

के परिचयात्मक सम्बोधन से हुआ। डॉ. शाइस्ता उरुज, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), क्षे.यू.चि.अ.सं., नई दिल्ली ने वेबिनार की कार्यवाही का संचालन किया जिसमें अनुसंधानकर्ताओं और वैज्ञानिकों सहित 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वेबिनार का समापन डॉ. अब्दुल रहीम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV एवं प्रभारी, यूनानी चिकित्सा केन्द्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।





कै.यू.चि.अ.प. ने जैव-नैतिकता पर वेबिनार का आयोजन किया

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (कै.यू.चि.अ.प.) ने अपने क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई के माध्यम से 5 फरवरी 2022 को जैवनैतिकता पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार का आयोजन यूनानी दिवस 2022 की पूर्व गतिविधियों के एक भाग के रूप में किया गया।

इस अवसर पर प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, कै.यू.चि.अ.प. ने अनुसंधान और विकास गतिविधियों के लिए जैवनैतिकता के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने पूरे देश में यूनानी अस्पतालों और अनुसंधान संगठनों में सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सभ्यता के विकास के संबंध

में कै.यू.चि.अ.प. और इसके संस्थानों की उल्लेखनीय गतिविधियों और योगदान पर भी प्रकाश डाला।

वेबिनार को संबोधित करते हुए डॉ. नंदिनी के. कुमार, पूर्व उप-महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् और उपाध्यक्ष, फोरम ऑफ एथिकल रिव्यू कमेटी इन इंडिया ने शोध लेख

प्रकाशन में पूर्वाग्रह और विसंगतियों और चिकित्सीय अभ्यास के दौरान उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों पर प्रकाश डाला।

प्रो. अब्दुल वदूद, निदेशक, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (रा.यू.चि.सं.), बंगलुरु ने यूनानी चिकित्सा और प्राचीन सभ्यताओं में जैवनैतिकता के ऐतिहासिक पहलुओं को रेखांकित किया और वर्तमान परिदृश्य में इसके महत्व पर भी प्रकाश डाला।

वेबिनार में जैवचिकित्सा अनुसंधान के बुनियादी नैतिक सिद्धांतों पर दो तकनीकी सत्रों में व्याख्यान और प्रस्तुतियां दी गईं। डॉ. जुगल किशोर, प्रमुख, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली, डॉ. जी नरेंद्रन, वैज्ञानिक-ई, आईसीएमआर-राष्ट्रीय क्षय रोग अनुसंधान संस्थान (एनआईआरटी), चेन्नई, प्रो. मोहम्मद अलीमुद्दीन कमरी, अध्यक्ष, अमराज-ए-जिल्द व तजीनियात विभाग, रा.यू.चि.सं., बंगलुरु, डॉ. बानो रेखा, वैज्ञानिक-ई, आईसीएमआर-एनआईआरटी, चेन्नई, डॉ. मेल्विन जॉर्ज, एसोसिएट प्रोफेसर, एसआरएम मेडिकल कॉलेज, अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, चेन्नई और डॉ. सी. पोन्नुराजा, वैज्ञानिक-ई, आईसीएमआर-एनआईआरटी, चेन्नई वेबिनार के वक्ता थे।

डॉ. एन. जहीर अहमद, उप निदेशक, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई और डॉ. टी. शाहिदा बेगम, डॉ. नोमान अनवर व अन्य अधिकारियों को सम्मिलित उनकी टीम ने वेबिनार की कार्यवाही का आयोजन और प्रबंधन किया।



क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई द्वारा 05 फरवरी 2022 को 'जीसीपी दिशानिर्देशों के संदर्भ में जैवनैतिकता' पर आयोजित वेबिनार के वक्ताओं और प्रतिभागियों का एक दृश्य।



मानसिक स्वास्थ्य पर संगोष्ठी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), मुंबई ने मानसिक स्वास्थ्य पर 8 फरवरी 2022 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का विषय 'यूनानी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण मानसिक स्वास्थ्य देखभाल' था।



क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई द्वारा 08 फरवरी 2022 को मानसिक स्वास्थ्य पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के वक्ता।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने मानसिक बीमारी की मूक महामारी जो कोविड-19 महामारी में उभर कर सामने आई है की ओर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने के.यू.चि.अ.प. के अधीनस्थ विभिन्न संस्थानों की अनुसंधान गतिविधियों की योजना इस प्रकार बनाने का आग्रह किया जिससे यूनानी चिकित्सा मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल और जागरूकता के लिए एक प्रमुख योगदानकर्ता बन सके। उन्होंने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य आज राष्ट्रीय प्राथमिकता है, इसलिए यूनानी चिकित्सा के लिए इस क्षेत्र में अपनी क्षमता का

उपयोग करने और व्यापक मानसिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था प्रदान करने के लिए इस से बेहतर समय नहीं हो सकता है।

डॉ. निर्मला देवी, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई ने किसी भी स्तर पर मानसिक बीमारी से पीड़ित लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए एकीकृत मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन प्रणाली प्रदान करने हेतु सभी चिकित्सा प्रणालियों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. वर्षा दवानी, मुख्य मनोचिकित्सक, सेंट्रल अस्पताल, मुंबई, डॉ. अर्चना गडकरी, अध्यक्ष, मनोचिकित्सा विभाग, सेंट्रल अस्पताल, मुंबई और डॉ. ईसा नदवी, प्रोफेसर, डॉ. एमआईजे तिब्बिया यूनानी मेडिकल कॉलेज, मुंबई संगोष्ठी के वक्ता थे।

शोधकर्ताओं द्वारा पोस्टर और लेख प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और भी वैज्ञानिक रूप दिया और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में के.यू.चि.अ.प. के शोध कार्य पर प्रकाश डाला।

डॉ. हुमैरा बानो, डॉ. निकहत शेख, डॉ. इरफान अहमद, मो. आदिल और संस्थान के अन्य अधिकारियों ने संगोष्ठी की कार्यवाही का आयोजन और प्रबंधन किया।



प्रबंधकीय प्रभावशीलता पर वेबिनार

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), मुंबई ने 28 जनवरी 2022 को 'प्रबंधकीय प्रभावशीलता का परिचय' पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया। यह वेबिनार यूनानी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में एक पूर्व गतिविधि के रूप में आयोजित किया गया।

कर्नल नरेश राजेन्द्र सिन्हा, क्षमता निर्माण, कौशल विकास एवं प्रबंधकीय एवं नेतृत्व कौशल कोच ने प्रबंधकीय प्रभावशीलता पर एक बहुत

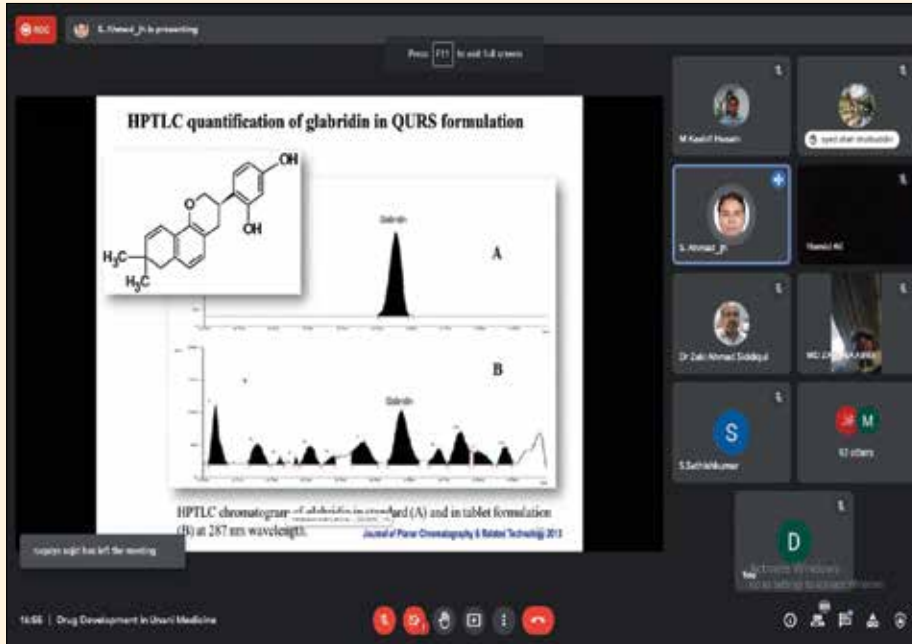
ही जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया।

वेबिनार की अध्यक्षता डॉ. निर्मला देवी, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई ने की जिसमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. निकहत शैख, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई ने वेबिनार की कार्यवाही का समन्वय किया।



औषधि विकास पर वेबिनार का आयोजन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिशद् (के.यू.चि.अ.प.) के अधीनस्थ क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), चेन्नई ने यूनानी दिवस 2022 की पूर्व गतिविधियों के भाग के रूप में 'यूनानी चिकित्सा में औषधि विकास' पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया।



वेबिनार का उद्देश्य यूनानी औषधि विकास के कार्य-क्षेत्र और चुनौतियों पर चर्चा करना और प्रतिभागियों को नई औषधि की खोज, नैदानिक परीक्षणों के चरणों और औषधि की खोज एवं विकास के दौरान उत्पन्न होने वाले नियामक समस्याओं के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने का अवसर प्रदान करना था।

प्रो. के. एम. वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने 'यूनानी चिकित्सा में औषधि विकास – कार्यक्षेत्र और चुनौतियाँ' पर एक व्यापक व्याख्यान दिया जबकि डॉ. सईद अहमद, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने 'औषधि विकास में नियामक समस्या' पर प्रकाश डाला।

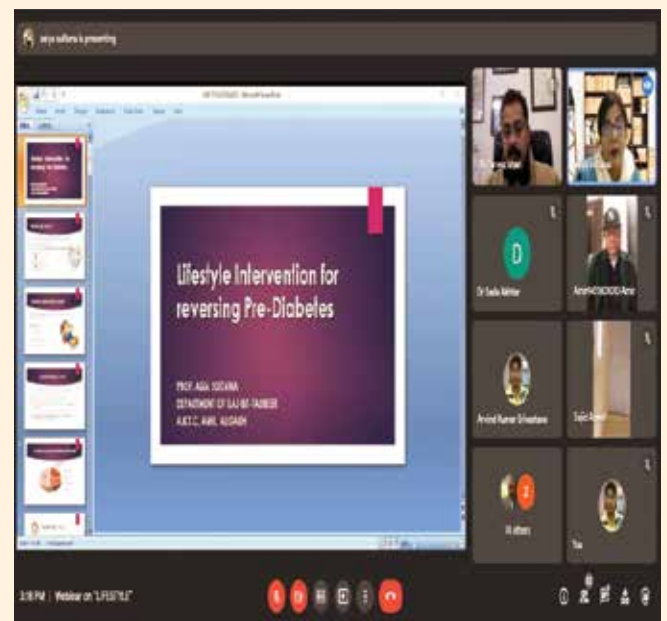
सामग्री और विचार-विमर्श के दृष्टिकोण से वेबिनार बहुत सफल रहा। विभिन्न आयुष संस्थानों के लगभग 250 प्रतिनिधियों ने बड़े जोश एवं उत्साह के साथ वेबिनार में भाग लिया। ●●●

क्षे.यू.चि.अ.सं., अलीगढ़ में जीवनशैली पर वेबिनार

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), अलीगढ़ ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर जीने के तरीके के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 05 जनवरी 2022 को 'जीवनशैली' पर एक वेबिनार का आयोजन किया।

डॉ. आसिया सुल्ताना, इलाज-बित-तदबीर विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने वेबिनार के संसाधन व्यक्ति के रूप में यूनानी चिकित्सा के अनुसार स्वस्थ जीवन शैली पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

वेबिनार का आरंभ डॉ. शीरीं अफ़ज़ा, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं., अलीगढ़ के उद्घाटन सम्बोधन से हुआ। डॉ. परवेज़ ख़ान, डॉ. राशिदुल इस्लाम अंसारी, डॉ. सदा अख़्तर, डॉ. साजिद अकील तथा क्षे.यू.चि.अ.सं. के अन्य अधिकारियों और लगभग 100 प्रतिभागियों ने वेबिनार में भाग लिया। ●●●



डॉ. काज़मी हमदर्द विश्वविद्यालय बांग्लादेश में यूनानी शैक्षणिक पीठ नियुक्त

डॉ. मुनव्वर हुसैन काज़मी, पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 31 मार्च 2022 को हमदर्द विश्वविद्यालय बांग्लादेश में यूनानी चिकित्सा शैक्षणिक पीठ का पदभार संभाला।

अनुसंधान एवं यूनानी चिकित्सा से संबंधित नीति विकास में उत्कृष्टता के प्रदर्शन और प्रोत्साहन के माध्यम से संस्थान को अकादमिक नेतृत्व प्रदान करेंगे। शैक्षणिक पीठ सहयोगात्मक अनुसंधान के अवसरों को भुनाएगी, पूर्ण किए गए अध्ययनों के परिणामों के प्रसार के लिए रणनीति तैयार करेगी, बांग्लादेश में यूनानी चिकित्सा के बारे में ज्ञान के



हमदर्द विश्वविद्यालय बांग्लादेश के कुलपति, रजिस्ट्रार, संकाय सदस्य एवं अधिकारी 31 मार्च 2022 को विश्वविद्यालय में यूनानी शैक्षणिक पीठ के रूप में डॉ. मुनव्वर हुसैन काज़मी का स्वागत करते हुए।

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और हमदर्द विश्वविद्यालय बांग्लादेश द्वारा 2018 में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद दोनों संस्थानों के बीच यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में सहयोग और सहकारिता की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से डॉ. अनिल खुराना, महानिदेशक प्रभारी, के.यू.चि.अ.प. और प्रो. मोहम्मद अब्दुल मन्नान, कुलपति, हमदर्द विश्वविद्यालय,

बांग्लादेश विश्वविद्यालय के यूनानी तथा आयुर्वेद चिकित्सा एवं सर्जरी संकाय में यूनानी चिकित्सा के लिए एक शैक्षणिक पीठ स्थापित करने पर सहमत हुए थे।

समझौता ज्ञापन के अधिदेश के अनुसार डॉ. काज़मी अकादमिक और अनुसंधान गतिविधियों का संचालन करेंगे, अकादमिक मानक और लघु/मध्यम अवधि के पाठ्यक्रम डिजाइन करेंगे, अनुसंधान गतिविधियों और नवाचारों को बढ़ावा देंगे और शिक्षण,

विश्वसनीय स्रोत के रूप में कार्य करेगी और कार्यशालाएं/सेमिनार/सम्मेलन आयोजित करेगी।

डॉ. काज़मी का प्रो. अबुल खैर, कुलपति, डॉ. मोहम्मद मोअज्जम हुसैन, रजिस्ट्रार, डॉ. खैरुल आलम, अध्यक्ष, यूनानी चिकित्सा और सर्जरी, डॉ. मीर मोहम्मद आज्जाद, अध्यक्ष, आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं सर्जरी विभाग और विश्वविद्यालय के अन्य संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।



कै.यू.चि.अ.प. के आठ प्रकाशनों का विमोचन

श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय कैबिनेट मंत्री, आयुष मंत्रालय और पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार ने 10 मार्च 2022 को शेर-ए-कश्मीर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, श्रीनगर में यूनानी दिवस समारोह और यूनानी चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के आठ प्रकाशनों का विमोचन किया।

विमोचित की गई पुस्तकों के शीर्षक इस प्रकार हैं: 'ऑरिएन्टेशन गाइडलाइन्स फॉर कम्यूनिटी हेल्थ ऑफिसर्स (अंडर यूनानी स्ट्रीम)', 'नेशनल फॉर्मूलरी ऑफ यूनानी मेडिसिन, पार्ट-IV, सेकेंड एडिशन', 'एडवान्स्ड एनालिटिकल मेथड्स फॉर क्वालिटी कंट्रोल ऑफ यूनानी ड्रग्स - अर्कियात (डिस्टिलेट्स)', 'रियाद अल-अदविया', 'अदविया कबिदीया: कदीम-ओ-जदीद तहकीकात की रौशनी में', 'ग्लिम्प्सेस ऑफ एक्टिविटीज़ एण्ड अचीवमेंट्स ऑफ सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन यूनानी मेडिसिन', 'एंटीआर्थ्राइटिक प्लांट्स इन यूनानी मेडिसिन' और 'हेपेटोप्रोटेक्टिव प्लांट्स इन यूनानी मेडिसिन'।

डॉ. मुंजपरा महेन्द्रभाई कालूभाई, माननीय राज्य मंत्री, आयुष मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय,

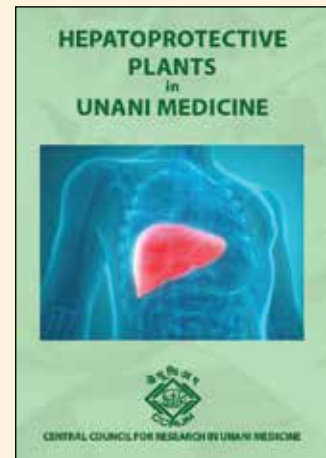
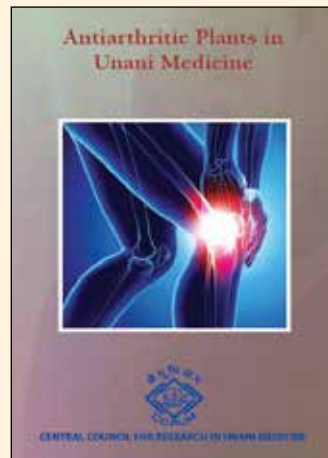
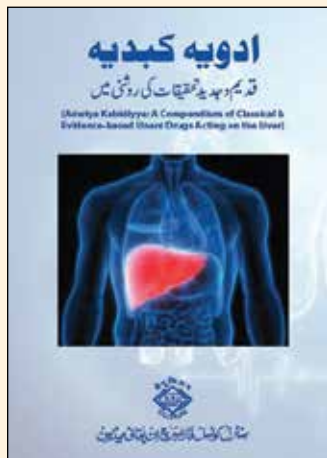
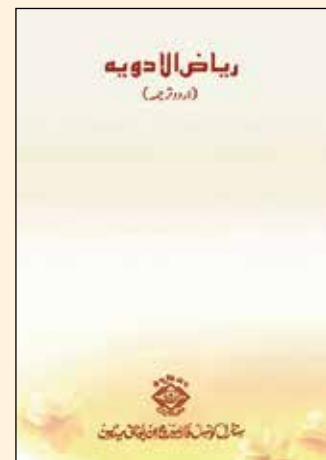
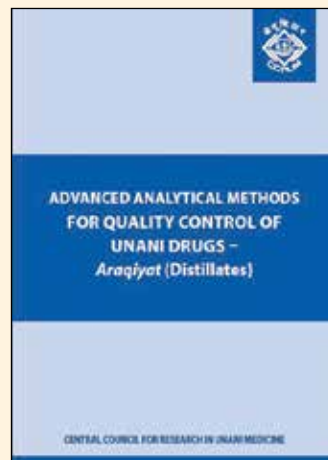
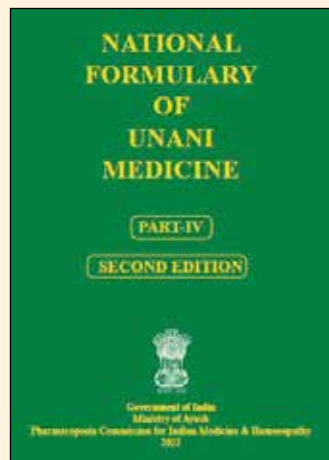
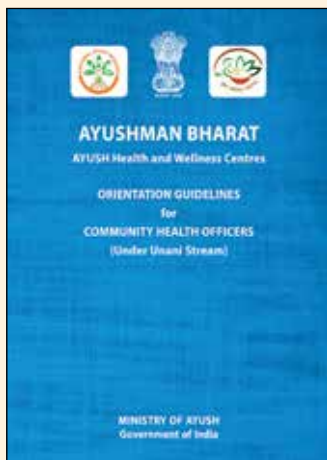
भारत सरकार, श्री प्रमोद कुमार पाठक, विशेष सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, श्री विवेक भारद्वाज, अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग, जम्मू और कश्मीर, वैद्य जयंत देवपुजारी, अध्यक्ष, राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग, नई दिल्ली, प्रो. तलत अहमद, कुलपति, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, प्रो. अकबर मसूद, कुलपति, बाबा गुलाम शाह बादशाह विश्वविद्यालय, राजौरी, प्रो. आसिम अली खान, महानिदेशक, कै.यू.चि.अ.प. और डॉ. एम. ए. कासमी, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार विमोचन के दौरान उपस्थित थे।

'ऑरिएन्टेशन गाइडलाइन्स फॉर कम्यूनिटी हेल्थ ऑफिसर्स (अंडर यूनानी स्ट्रीम)' में भारत सरकार की आयुष्मान

भारत योजना के अधीन स्थापित आयुष स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में कार्यरत सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों (यूनानी चिकित्सा) के लिए परिचालन/संचालन दिशा-निर्देश शामिल हैं। यह सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों और उनकी टीम के क्षमता निर्माण के लिए एक प्रारंभिक संरचना से अवगत कराता है, आयुष स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में होने वाली विभिन्न गतिविधियों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करता है और यूनानी चिकित्सा पर आधारित विधियों और हस्तक्षेपों के माध्यम से स्वास्थ्य वर्धन तथा रोग निवारण एवं नियंत्रण के उपायों का विवरण देता है। ये दिशानिर्देश स्वास्थ्य संरक्षण और रोग के निवारण एवं नियंत्रण हेतु दैनिक आधार पर अपनाए जाने वाले स्वस्थ व्यवहारों पर केंद्रित 12 सेवा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों



माननीय मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल और डॉ. मुंजपरा महेन्द्रभाई एवं गणमान्य 10 मार्च 2022 को श्रीनगर में आयोजित यूनानी चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान कै.यू.चि.अ.प. के प्रकाशन का विमोचन करते हुए।



से संबंधित प्राथमिक हस्तक्षेप का वर्णन करते हैं।

‘नेशनल फॉर्मूलरी ऑफ यूनानी सेकेंड, पार्ट-IV, सेकेंड एडिशन’ इस शीर्षक का संशोधित संस्करण है जिसे पहली बार वर्ष 2006 में प्रकाशित किया गया था। यूनानी मिश्रित औषधियों पर आधिकारिक दस्तावेज़ के इस खण्ड में सात अलग-अलग खुराक रूपों में 166 यूनानी मिश्रणों का विवरण है। इस संस्करण की प्रमुख विशेषता यूनानी औषध विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिक विनिर्माण प्रगति का समावेश है।

‘एडवान्स्ड एनालिटिकल मेथड्स फॉर क्वालिटी कंट्रोल ऑफ यूनानी

ड्रग्स — अर्कियात (डिस्टिलेट्स)’ में भारतीय यूनानी भेषजकोष में वर्णित अर्कियात के गुणवत्ता नियंत्रण अध्ययनों को विस्तारपूर्वक बताया गया है। पुस्तक में 10 अर्कियात अर्थात् अर्क-ए-अजीब, अर्क-ए-अजवाइन, अर्क-ए-बादियान, अर्क-ए-ब्रिन्जासिफ़, अर्क-ए-गाजर सादा, अर्क-ए-गुलाब, अर्क-ए-कासनी, अर्क-ए-केवड़ा, अर्क-ए-मको और अर्क-ए-नाना के गुणवत्ता नियंत्रण विश्लेषण पर आधारित आठ अध्याय शामिल हैं। पुस्तक के अध्याय-1 में अर्कियात का संक्षिप्त परिचय दिया गया है और इनको तैयार करने की विभिन्न विधियों के बारे में बताया गया है जबकि

अध्याय-2 में चयनित अर्कियात का भेषजकोषीय विवरण, उन्हें तैयार करने की विधि और मूल गुणवत्ता नियंत्रण मापदण्डों का उल्लेख है। अध्याय-3 और 4 एचपीटीएलसी और जीसी-एमएस का उपयोग करते हुए अर्कियात के गुणवत्ता नियंत्रण विश्लेषण को प्रस्तुत करता है जबकि अध्याय 5, 6 और 7 क्रमशः स्थिरता परीक्षण, फार्माकोकाइनेटिक्स और प्रतिरूप विश्लेषण पर आधारित हैं। अंतिम अध्याय में अर्कियात से जुड़े सुरक्षा, प्रभावकारिता और विशाक्तता के विषय पर चर्चा की गई है।

‘रियाद अल-अदविया’ (उर्दू अनुवाद) 16वीं शताब्दी के यूनानी चिकित्सक

यूसुफ़ बिन मुहम्मद बिन यूसुफ़ द्वारा यूनानी एकल और मिश्रित औषधियों पर आधारित एक महत्वपूर्ण फ़ारसी ग्रंथ है। इसमें सैकड़ों यूनानी औषधियों के अति महत्वपूर्ण पहलूओं का संक्षिप्त विवरण है। इनकी चयन प्रक्रिया में एकल औषधियों की उपलब्धता और मिश्रणों की सरल फार्मास्युटिकल प्रक्रिया को ध्यान में रखा गया है।

‘अदविया कबिदीया: क़दीम-ओ-जदीद तहकीकात की रौशनी में’ उर्दू भाषा में यकृत पर कार्य करने वाली क्लासिकल और साक्ष्य आधारित यूनानी औषधियों का एक सार है। इस सार-संग्रह में यकृत के संरक्षण और इससे संबंधित रोगों के उपचार में उपयोग की जाने वाली यूनानी औषधियों के बारे में बताया गया है। इसमें यकृत रोगों में उपयोगी समय-परीक्षणित यूनानी नुस्खों, यूनानी एकल औषधियों और क्लासिकल मिश्रणों तथा यकृत पर कार्य करने वाली साक्ष्य-आधारित

यूनानी एकल एवं मिश्रित औषधियों का वर्णन है। यह संकलन के.यू.चि.अ.प. की एक साहित्यिक अनुसंधान परियोजना का परिणाम है।

‘ग्लिम्प्सेस ऑफ़ एक्टिविटीज़ एण्ड अचीवमेंट्स ऑफ़ सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन यूनानी मेडिसिन’ में यूनानी चिकित्सा से अवगत कराया गया है और के.यू.चि.अ.प., इसके संस्थागत नेटवर्क, बुनियादी संरचना, गतिविधियों एवं अनुसंधान कार्यक्रमों, उपलब्धियों, हाल के घटनाक्रम और पहलों के साथ-साथ महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का अवलोकन किया गया है। प्रकाशन में कोविड-19 महामारी के समय में के.यू.चि.अ.प. की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी बताया गया है।

‘एंटीआर्थाइटिक प्लांट्स इन यूनानी मेडिसिन’ में यूनानी चिकित्सा के माध्यम से गठिया रोग के उपचार में उपयोग किये जाने वाले कुछ औषधिय पौधों का उनके वानस्पतिक विवरण, उपयोगी भाग, स्वभाव, उपयोग की विधि, खुराक

और इनके महत्वपूर्ण मिश्रणों के साथ उल्लेख किया गया है। इस प्रकाशन में यूनानी एकल औषधियों के गठियारोधी, एनाल्जेसिक और एंटी-इन्फ्लामेटरी प्रभाव को सिद्ध करने के लिए किए गए वैज्ञानिक अध्ययनों के संदर्भ भी शामिल हैं।

‘हेपेटोप्रोटेक्टिव प्लांट्स इन यूनानी मेडिसिन’ में यूनानी चिकित्सा साहित्य में उल्लेखित कुछ महत्वपूर्ण हेपेटोप्रोटेक्टिव पौधों का वर्णन किया गया है। इस प्रकाशन में पौधों के वानस्पतिक विवरण, उपयोगी भाग, स्वभाव (मिज़ाज), उपयोग करने की विधि, खुराक और यकृत से संबंधित रोगों के उपचार में उपयोग किये जाने वाले इनके महत्वपूर्ण मिश्रणों के बारे में जानकारी दी गई है। इस पुस्तिका में इन पौधों के महत्वपूर्ण घटकों और इनके हेपेटोप्रोटेक्टिव गुणों की पुष्टि करने वाले अध्ययनों का भी उल्लेख किया गया है।



रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं. में यूनानी चिकित्सा पर वेबिनार का आयोजन

राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं.), हैदराबाद ने 31 जनवरी 2022 को “यूनानी चिकित्सा के मौलिक पहलूओं” पर एक वेबिनार का आयोजन किया।

प्रो. डॉ. गुलामुद्दीन सोफी, अध्यक्ष, इल्मुल अदविया विभाग और डॉ. वसीम अहमद, सहायक प्रोफेसर, कुल्लियात विभाग, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (रा.यू.चि.सं.), बेंगलुरु ने ‘यूनानी चिकित्सा के बुनियादी सिद्धांतों की समझ’ और ‘यूनानी चिकित्सा पद्धति के दृष्टिकोण से उच्च रक्तचाप – एक व्याख्या’ पर व्याख्यान दिया। डॉ.

अहमद मिन्हाजुद्दीन, निदेशक प्रभारी, रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद ने यूनानी चिकित्सा के मूलभूत सिद्धांतों को समझने के महत्व पर बल दिया। वेबिनार का समापन डॉ. अनवर अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) वैज्ञानिक-IV, रा.त्व.रो.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।



UNANI DAY 2022
You are cordially invited to attend the National webinar on
“Fundamental Aspects of Unani Medicine”
Date: 31 January, 2022 Time: 02.30PM onwards

Patron
Prof. Javed Ali Khan
Director General CCRUM &
Advisor (Unani) Ministry of AYUSH
Govt of India

Organizing Chairperson
Dr. Ahmad Hameeduddin
Director ITC MUMBAI Hyderabad
CCRUH, Ministry of AYUSH
Govt of India

Guest speakers

Dr. Chulayuddin Sult
Professor
Department of Basul Aqila
National Institute of Unani Medicine,
Bangalore
Topic: Understanding Basul
principles of Unani medicine
with their importance for
India

Dr. Waseem Ahmad
Assistant Professor
Department of Kulliya Tibb
National Institute of Unani Medicine,
Bangalore
Topic: Hypertension in the
viewpoint of Unani system of
medicine - An Interpretation

Webinar link: meet.google.com/vrf-xmyk-gch?hs=224

Organise by
National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders
Hyderabad, CCRUM, Ministry of AYUSH, Govt. India

फार्माकोविजिलेंस पर वेबिनार का आयोजन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (के.यू.चि.अ.प.) ने अपने क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), मुंबई के माध्यम से 'आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों के फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम' पर 16 मार्च 2022 को एक वेबिनार का आयोजन किया।



16 मार्च 2022 को 'आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी एवं होम्योपैथी औषधियों पर फार्माकोविजिलेंस कार्यक्रम' पर आधारित वेबिनार के वक्ताओं, आयोजकों और प्रतिभागियों का एक दृश्य।

वेबिनार का उद्देश्य आयुष चिकित्सकों और अन्य हितधारकों के बीच फार्माकोविजिलेंस के बारे में जागरूकता पैदा करना और प्रतिकूल औषधीय प्रतिक्रियाओं को रिपोर्ट करने की आदत पैदा करना था।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. एन. ज़हीर अहमद, उप निदेशक, क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई ने फार्माकोविजिलेंस के बारे में बुनियादी जानकारी साझा की। उन्होंने के.यू.चि.अ.प. के फार्माकोविजिलेंस केंद्रों के दायरे और बुनियादी कार्य के बारे में भी बताया।

डॉ. हुमैरा बानो, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई और डॉ.

मोहम्मद अलीमुद्दीन कमरी, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, बेंगलुरु ने क्रमशः 'आयुष औषधीयों का फार्माकोविजिलेंस – एक मूल्यांकन' और 'फार्माकोविजिलेंस के परिप्रेक्ष्य में यूनानी चिकित्सा में दवाओं के रूपों का महत्व' पर अपने व्याख्यान दिए।

इससे पहले डॉ. निर्मला देवी, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई ने वेबिनार के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. निकहत शेख, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), क्षे.यू.चि.अ.सं., मुंबई ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, की आधिकारिक त्रैमासिक पत्रिका है। यह हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित होती है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् से संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं। सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर में प्रकाशित सामग्री को सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।

मुख्य संपादक

प्रो. आसिम अली खान

कार्यकारी संपादक

मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समिति

नाहीद परवीन
गज़ाला जावेद
जमाल अख्तर
शबनम सिद्दीकी

संपादकीय कार्यालय

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्
61-65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी'
ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110 058

दूरभाष: +91-11-28521981, 28525982

फैक्स: +91-11-28522965

ई-मेल: unanimedicine@gmail.com

rop.ccrum@gmail.com

वेबसाइट: <https://ccrum.res.in>

मुद्रण: रैकमो प्रैस प्रा. लि.

सी-59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1

नई दिल्ली-110020



CCRUM newsletter

A Quarterly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 42 • Number 1

January–March 2022

Unani Day Celebration and International Conference on Unani Medicine

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM), Ministry of Ayush, Government of India organized Unani Day Celebration and International Conference on Unani Medicine at Sher-i-Kashmir International Conference Centre (SKICC), Srinagar during March 10–11, 2022. Themed on 'Diet and Nutrition in Unani Medicine for Good Health and Well-being', the conference was the first of its kind in the Kashmir Valley and made a very good impact through scientific deliberations.

Shri Sarbananda Sonowal, Hon'ble Cabinet Minister, Ministry of Ayush and Ministry of Ports, Shipping & Waterways, Government

of India was the chief guest and Dr. Munjpara Mahendrabhai Kalubhai, Hon'ble Minister of State, Ministry of Ayush and Ministry of Women &



Hon'ble Minister Shri Sarbananda Sonowal addressing International Conference on Unani Medicine in Srinagar on March 10, 2022.



Dignitaries on the dais during National Anthem in the Inaugural Session of International Conference on Unani Medicine organized by the CCRUM, Ministry of Ayush on March 10–11, 2022 at SKICC, Srinagar.

Child Development, Government of India was the distinguished guest of honour in the conference.

The conference had a panel discussion and eight scientific sessions on the sub-themes, viz. 'Diet and Nutrition – An Important Branch in Health Sector', 'Unani Medicine for Global Health', 'Diet and Nutrition – An Important Component for Improving Immunity in Unani Medicine', 'Lessons Learned during Pandemic', 'Achieving Good Health & Wellbeing – SDG-3', 'Traditional Systems of Medicine for Non-communicable Diseases (NCDs)' and 'Health & Wellness'.

A number of national and international experts and luminaries from the field of health sciences shared their knowledge, experiences and expertise in the conference. Stakeholders from industry, academia and research organizations engaged in the development of Unani Medicine and related health sciences attended

the conference in large number physically as well as in online mode.

Unani Day is celebrated on February 11 to mark birth anniversary of Hakim Ajmal Khan. However, Unani Day celebration had to be shifted to March 10-11 this year due to the COVID-10 pandemic.

Inaugural Session

Shri Sarbananda Sonowal, Hon'ble Cabinet Minister, Ministry of Ayush and Ministry of Ports, Shipping & Waterways, Government of India inaugurated Unani Day Celebration and International Conference on Unani Medicine. **Dr. Munjpara Mahendrabhai Kalubhai**, Hon'ble Minister of State, Ministry of Ayush and Ministry of Women & Child Development, Government of India was the distinguished guest of honour in the conference.

Shri Pramod Kumar Pathak, Special Secretary, Ministry of Ayush, Government of India, **Shri Vivek Bhardwaj**, Additional

Chief Secretary, Health & Medical Education Department, J&K, **Vaidya Jayant Deopujari**, Chairman, National Commission for India System of Medicine, New Delhi, **Prof. Talat Ahmad**, Vice Chancellor, University of Kashmir, Srinagar, **Prof. Akbar Masood**, Vice Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah University, Rajouri, **Prof. Asim Ali Khan**, Director General, CCRUM and **Dr. M. A. Qasmi**, Adviser (Unani), Ministry of Ayush, Government of India also graced the conference organized in hybrid mode.

Inaugurating the conference, **Shri Sarbananda Sonowal** said that the Government of India under the visionary leadership of Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi Ji has accorded great importance to the multifaceted development of Unani Medicine and other Indian systems of medicine. He informed that because of the able leadership of Shri Narendra Modi Ji, the World Health Organization (WHO) has decided to establish Global Centre for Traditional Medicine in India which would provide a great opportunity for researchers and students to lead the world in Traditional Medicine. Talking about Unani Day, he said that it is celebrated on the birth anniversary of Hakim Ajmal Khan which is very significant because it is due to the contributions made by him and many other scholars that we inherited this comprehensive medical system.



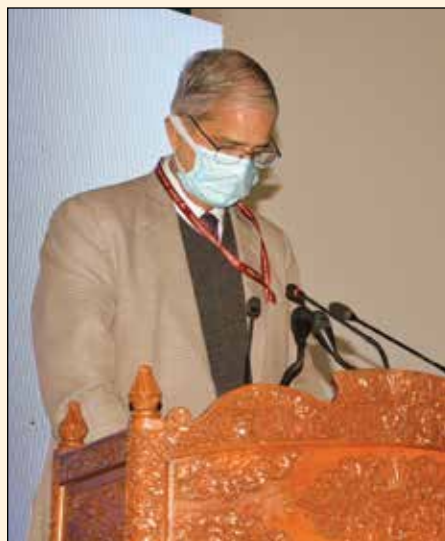
A view of august audience during National Anthem in the Inaugural Session of International Conference on Unani Medicine organized by the CCRUM, Ministry of Ayush on March 10–11, 2022 at SKICC, Srinagar.



*Hon'ble Minister Dr. Munjpara
Mahendrabhai Kalubhai*

Referring to Jammu & Kashmir region, he said that we are all proud of this beautiful region which has been successful in positioning itself as an attraction for tourists at global level. He further said that J&K is rich in plant resources and stressed the need to explore them and conduct researches for their medicinal use so that the mankind is benefited. He informed that the Ministry of Ayush has recently provided a fund of Rs. 7.07 crore for developing an Ayush Centre of Excellence for Regimenal Therapy at the Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Srinagar. He suggested that the youth of J&K should take advantage of the government initiatives being undertaken in the region.

In his address, Hon'ble Minister **Dr. Munjpara Mahendrabhai** said that diet is very important as it is the basic source of energy. He further said that Unani Medicine provides



Shri Pramod Kumar Pathak

detailed guidelines for healthy food habits to maintain health and prevent diseases. He lauded the role of Ayush system in immunity enhancement through drugs and medicinal foods and fighting against COVID-19. He also appreciated contributions of the CCRUM in research and development in Unani Medicine.

Speaking on the occasion,



Shri Vivek Bhardwaj

Shri Pramod Kumar Pathak said that proper and nutritious diet is key to good health and well-being and Unani Medicine has a holistic approach to correct the imbalances that cause diseases. He informed that the Ministry of Ayush has established National Institute of Unani Medicine with a 200-bedded hospital in Ghaziabad as a part of the vision of Hon'ble Prime Minister



Dr. Atul Mohan Kochhar, Chief Executive Officer, NABH, New Delhi presenting NABH Accreditation Certificate for RRIUM, Srinagar to Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM.



Vaidya Jayant Deopujari



Prof. Talat Ahmad



Prof. Akbar Masood

Shri Narandra Modi for provision and promotion of quality education, research and healthcare services through Unani Medicine and other Ayush systems.

Shri Vivek Bhardwaj said that Unani Medicine is very popular in J&K and for its further promotion and development the Union Government is making concerted efforts including introduction of MD in Unani Medicine at RRIUM, Srinagar and BUMS at the first Government Unani Medical College of J&K.

Vaidya Jayant Deopujari said that knowledge of Arabic and Urdu languages is very important for education and training in Unani Medicine same as the knowledge of Sanskrit is important for Ayurveda and therefore suitable changes have been made in the Minimum Standards for Indian System of Medicine and colleges have been instructed to appoint full-time teachers for Arabic and Urdu

languages.

Prof. Talat Ahmad appreciated the role of CCRUM in research and development in Unani Medicine and urged to expand collaborations with other institutions for interdisciplinary research in Unani Medicine.

Prof. Akbar Masood lauded the contribution of the CCRUM and RRIUM, Srinagar in research, healthcare delivery and higher education in Unani Medicine.

Earlier in his welcome address, **Prof. Asim Ali Khan** said that indigenous medicine systems have received unprecedented support and patronage from the Government of India led by Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi. He mentioned that in the last September Hon'ble Ayush Minister inaugurated BUMS course at the first Government Unani Medical College in J&K established with substantial financial support from the Ministry of Ayush. Talking about

the activities and achievements of the CCRUM, he said that it has witnessed multifaceted growth and progress in the past few years.

The inaugural session concluded with the vote of thanks proposed by **Dr. M. A. Qasmi**.

The inaugural session also witnessed release of conference souvenir and eight books published by the CCRUM, release of two Unani e-books developed by the National Institute of Indian Medical Heritage functioning under the Central Council for Research in Ayurvedic Sciences at Hyderabad, release of CCRUM apps, presentation of NABH Accreditation Certificate to RRIUM, Srinagar, exchange of MoU between Morarji Desai National Institute of Yoga, New Delhi and Directorate of Ayush, J&K for research and training, distribution of YCB certificates to felicitate Yoga instructors and live Yoga demonstration.

Launching of the apps on 'Single



Prof. Asim Ali Khan

Unani Drugs', 'Unani Treatment Guidelines for Common Diseases' and 'Know Your Temperament' by Hon'ble Minister Shri Sarbananda Sonowal was highly appreciated by Unani and other stakeholders as it was the first of its kind initiative of the CCRUM, Ministry of Ayush in the field of Unani Medicine.

Panel Discussion

The panel discussion was held on the theme 'Diet and Nutrition: An

Important Branch in Health Sector'. Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM, Prof. Akbar Masood, Vice Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah University, Rajouri and Prof. Mohammed Afzal Zargar, Registrar, Central University of Kashmir moderated the session. Prof. Talat Ahmad, Vice Chancellor, University of Kashmir, Srinagar, Vaidya Devendra Triguna, President, Association of Manufacturers of Ayurvedic Medicines, New Delhi, Dr. S. Farooq, President, Himalaya Drug Company, New Delhi, Dr. W. Selvamurthy, President, Amity Science, Technology and Innovation Foundation and Director General, Amity Directorate of Science and Innovation, Noida, Shri Pradeep Multani, President, PHD Chamber of Commerce and Industry, New Delhi, Dr. Mohd. Ashraf Ganie, Professor, Department of Endocrinology, Sher-i-Kashmir Institute of Medical Sciences

(SKIMS), Srinagar, Prof. Abdul Wadud, Director, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru, Prof. K. M. Y. Amin, Aligarh Muslim University, Aligarh, Prof. M. C. Sharma, Chairman, Scientific Advisory Body, Pharmacopoeia Commission for Indian Medicine & Homeopathy, Ghaziabad, Dr. Mohan Singh, Director, Department of Ayush, J&K and Dr. Santosh Joshi, Hamdard Laboratories India participated as the panelists.

In his initial remarks, Prof. Asim Ali Khan emphasized that several disorders like diabetes, heart diseases and dyslipidaemia are directly related to diet and can be prevented by following dietary recommendation of Unani Medicine.

Shri Pradeep Multani said that diet and nutrition play a key role in the management of diseases. He added that several diets and drugs mentioned in Unani literature can decrease various lifestyle disorders including obesity.

Dr. W. Selvamurthy said that the concept of diet and nutrition had been discussed in detail in classical literature of Unani Medicine and added that incompatible diet disturbs the quality and quantity of *Khilt* (humour) which causes diseases. He also discussed the anticancer property of *Dawa al-Kurkum*.

Dr. S. Farooq laid emphasis on adopting appropriate dietary measures by patients in order to



Hon'ble Minister Shri Sarbananda Sonowal presenting Yoga Certificate to a Yoga Instructor during International Conference on Unani Medicine on March 10, 2022 at SKICC, Srinagar.



Dr. W. Selvamurthy

restrict the disease from getting worse. He also discussed health benefits of various foods mentioned in Unani Medicine and informed that radish is useful in piles and cucumber is beneficial in kidney diseases.

Prof. Talat Ahmad stressed the need for modernization of traditional systems of medicine and said that more research should be carried out on Unani drugs.

Dr. Santosh Joshi, Hamdard Laboratories India said that the prevalence of various diseases can be decreased by adopting

appropriate dietary measures.

Dr. M. A. Waheed said that barley water is useful in cases of hemiplegia, paraplegia and other cerebro-vascular diseases. He also said that immunomodulation can be done through the use of *Ghidhā'-i-Dawā'ī* and *Dawā'-i-Ghidhā'ī*.

Prof. M. C. Sharma shared his experiences regarding the use of various diets in many disease conditions. He emphasized that incompatible diets may be harmful in many diseases particularly autoimmune disorders.

Prof. K. M. Y. Amin stressed that diet should be recommended according to the temperament of patients and diseases. He suggested that monographs on Unani diets should be prepared.

Prof. Abdul Wadud suggested that *‘Ilāj bi’l-Ghidhā’* (dietotherapy) should be given priority while treating diseases. He emphasized that even healthy individuals should take diet according to the season and temperament.

Dr. Mohan Singh shared his personal experiences about the use of garlic in hypertension.

Prof. Mohammed Afzal Zargar also shared his experiences about diet and nutrition.

Prof. Akbar Masood summed up the discussion with his observations and concluding remarks.

Use of compatible and appropriate diets, preferring dietotherapy to other modes of treatment, role of *Asbāb Sitta Ḍarūriyya* (six essential factors), importance of *Akhlāt* (humours) and *Mizāj* (temperament) were highlights of the session.

Scientific Session-I

In Scientific Session-I on ‘Unani Medicine for Global Health’, Dr. Mohammad Kamil, Director General, Lotus Holistic Healthcare Institute, Abu Dhabi, UAE, Dr. Goh Cheng Soon, Director, Traditional and Complementary Medicine, Ministry of Health, Malaysia, Prof. Arman Zargaran, Coordinator, International Affairs for Traditional Medicine, Ministry of Health & Professor, School of Persian Medicine, Tehran University of Medical Sciences, Iran and Dr. Mujeeb Hoosen, Coordinator, Unani Tibb, School of Community and Health Sciences, University of the Western Cape, South Africa delivered their addresses. Prof. Akbar Masood, Vice-Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah University, Rajouri and Prof. Suhail



Esteemed moderators and panellists of the Panel Discussion on ‘Diet and Nutrition: An Important Branch in Health Sector’.



Dr. Mohammad Kamil



Dr. Goh Cheng Soon



Prof. Arman Zargaran



Dr. Mujeeb Hoosen

Fatima, Jamia Hamdard, New Delhi chaired the session.

In his address on 'Quality and Safety of Unani Medicine – A Global and Dire Need Today', **Dr. Mohammad Kamil** stated that due to the increased commercialization of herbal medicines, there is a need to establish certain quality control measures and standardization techniques to ensure the quality and safety of Unani drugs.

In her talk on 'Practice of Traditional and Complementary Medicine in Malaysia', **Dr. Goh Cheng Soon** presented government policy and regulatory aspects as

well as state of Traditional and Complementary Medicine in Malaysia.

Prof. Arman Zargaran presented his talk on the 'Current Scenario of Traditional Medicine in Iran' and briefed about the government policies for the development and integration of Unani/Persian Medicine into the medical health system. He informed that more than 100 research projects on Traditional Medicine were carried out during the pandemic of COVID-19.

Dr. Mujeeb Hoosen talked about the 'Scope of Unani Medicine in South Africa' and said that various

Unani Tibb therapies like cupping and hydrotherapy are provided at the University of the Western Cape and Unani practitioners are allowed to practice according to the pharmacopoeias. He informed that the university targets to develop international collaborations, introduce PG courses and promote Unani Medicine through inter professional education and practice.

Scientific Session-II

Scientific Session-II had **Prof. Dr. Md. Abdul Mannan**, Former Vice-Chancellor, Hamdard University Bangladesh, **Dr. S. M. Raeesuddeen**, Senior Lecturer, Institute of Indigenous Medicine, University of Colombo, Sri Lanka, **Dr. Saifullah Khalid Adamji**, In-charge, Licensing and Medical Policies, Sharjah Health Authority, Sharjah, UAE and **Ms. Umedakhon Yuldasheva**, Assistant Professor, Department of Pharmacology and Dean, Faculty of Dentistry, Avicenna Tajik State Medical University, Tajikistan as speakers. **Dr. Mohd. Ashraf Ganie**, Professor, Department of Endocrinology,



Prof. Akbar Masood, Vice-Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah University, Rajouri and Prof. Suhail Fatima, Jamia Hamdard, New Delhi chairing Scientific Session-I.



Dr. Md. Abdul Mannan



Dr. S. M. Raeesuddeen



Dr. Saifullah Khalid Adamji



Ms. Umedakhon Yuldasheva

SKIMS, Srinagar, **Prof. Nasir Ali Khan**, Principal, Jamia Tibbiya Deoband, Saharanpur, **Dr. Anwar Saeed**, Director, Jamia Tibbiya Deoband, Saharanpur and **Dr. G. V. R. Joseph**, Director, Homeopathic Pharmacopoeia Laboratory, Ministry of Ayush, Government of India chaired the session.

Dr. Md. Abdul Mannan shared Bangladesh policy to scale up Unani, Ayurveda and Homoeopathic Medicine services throughout the country along with allopathic treatment to ensure quality and equitable health services for all citizens of Bangladesh.

Dr. S. M. Raeesuddeen shared

his experiences about the effects of dietary modifications in the management of psoriasis, mucosal dominant pemphigus vulgaris and hirsutism. He said that Unani physicians have always laid great emphasis on diet.

Dr. Saifullah Khalid Adamji presented the state of Traditional Medicine in UAE and stressed the need for implementing a comprehensive policy and legislation for the development and registration of Unani pharmaceutical products.

Ms. Umedakhon Yuldasheva delivered her presentation on the 'Study of the Antidiabetic Effects of Medicinal Plants of Tajikistan'

and stated that the test drug was found very effective. She shared that a lot of research works on some medicinal herbs have been carried out in Tajikistan showing definite action on various systems of the body.

The session advocated for the adoption of Unani Medicine for the improvement of immunity and maintenance of good health at international level.

Scientific Session-III

Scientific Session-III themed on 'Diet and Nutrition – An Important Component for Improving Immunity in Unani Medicine' had five addresses by **Prof. Hakim Syed Zillur Rahman**, Founder President, Ibn Sina Academy of Medieval Medicine and Sciences, Aligarh, **Prof. Shahul Hameed**, Principal, Markaz Unani Medical College & Hospital, Kozhikode, Kerala, **Dr. Altaf Hussain Shah**, Senior Medical Officer, Ayush, J&K, **Dr. Waheed-ul-Hasan**, Nodal Officer, J&K Medicinal Plants Board and **Dr. Hilal Ahmad Punoo**, Associate Professor, Department of Food



Chairperson and rapporteurs of Scientific Session-II on 'Unani Medicine for Global Health'.



Prof. Hakim Syed Zillur Rahman

Science & Technology, University of Kashmir, Srinagar. **Prof. Raies A. Qadri**, Head, Department of Biotechnology and **Dr. Rabia Hamid**, Head, Department of Nanotechnology, University of Kashmir, Srinagar chaired the session.

Prof. Hakim Syed Zillur Rahman presented historical insights in diet and nutrition in Unani Medicine. He also talked about the contributions of various Unani physicians with regard to diet and nutrition.



Prof. Shahul Hameed

Prof. Shahul Hameed talked about hepato-protective diet and nutrition. He discussed some important foods and drugs with their chemical constituents used in Unani Medicine for their hepato-protective actions.

Dr. Altaf Hussain Shah elaborated on ‘*Ilāj bi’l-Ghidhā*’ (dietotherapy) and discussed its general principles and significance in the promotion and maintenance of health as well as treatment of diseases. He also talked about

certain Unani modified diets which serve as a preventive measure as well as therapeutic aid in certain metabolic disorders.

Dr. Waheed-ul-Hassan focused on medicinal plants in Kashmir Valley for health and immunity and informed that J&K has 5000 medicinal plant species and about 60% of medicinal plants used in herbal industry are found in J&K. He discussed a few plants that hold medicinal importance and are used as a diet and for immunomodulation as well.

Dr. Hilal Ahmad Punoo talked about recent advances in nutraceuticals and mentioned certain food sources of nutraceuticals with their potential benefits like milk, meat, fish oils, mustard, fruits, vegetables, tea, soyabean, cocoa, chocolates, etc. and nutraceuticals available in market.

Scientific Session-IV

In Scientific Session-IV, **Prof. Mohd. Anwar**, Chairman, Department of Ilaj-bit-Tadbeer, Aligarh Muslim University, Aligarh, **Dr. Mariya Amin Qureshi**, Assistant Professor, Department of Social and Preventive Medicine, Government Medical College, Srinagar, **Prof. Geer Mohammad Ishaq**, Department of Pharmaceutical Sciences, University of Kashmir, Srinagar, **Dr. Shabbir Ahmad Parray**, Medical Officer, Department of Ayush, J&K and **Dr. Khalid Zaffar Masoodi**, Assistant Professor,



Prof. Raies A. Qadri and Dr. Rabia Hamid, University of Kashmir, Srinagar chairing Scientific Session-III.

Division of Plant Biotechnology, Sher-e-Kashmir University of Agricultural Sciences and Technology of Kashmir (SKUAST-Kashmir), Srinagar delivered their presentations on 'Diet and Nutrition – An Important Component for Improving Immunity in Unani Medicine'. **Dr. Naveed Nazir Shah**, Head, Chest Medicine, CD Hospital, Srinagar and **Dr. Mohammad Farooq Naqshbandi**, Medical Superintendent, Government Unani Hospital, Srinagar chaired the session.

Prof. Mohd. Anwar made an online presentation on 'Holistic Approach of Management of Metabolic Syndrome with Reference to Unani Dietetics'. He spoke about how '*Ilāj bi'l-Tadbīr*' can provide a better solution in the forms of proper dietary management and lifestyle modification through moderation and modification in *Asbāb Sitta Ḍarūriyya*.

Dr. Mariya Amin Qureshi focused on 'Importance of Diet in COVID Times' and asserted that

'No foods or dietary supplements can prevent COVID-19 infection, but by maintaining a healthy diet we can keep our immune system strong for fighting the disease'.

Prof. Geer Mohammad Ishaq delivered his presentation on 'Improving Immunity (Quwwat-i-Mudāfa'at) with Unani Medicine, Nutrition and Diet' and highlighted the role of *Asbāb Sitta Ḍarūriyya* (six essentials), '*Anāṣir Arba'a*' (four elements) and *Akhlāt Arba'a* (four humours). Further he described, in length, the immunomodulatory effects of various drugs.

In his presentation on 'Role of '*Ilāj bi'l-Ghidhā*': An Important Mode of Treatment in Unani Medicine', **Dr. Shabbir Ahmad Parray** discussed the need of *Ghidhā*', theory and philosophies behind the categorization of *Ghidhā*', and general principles of '*Ilāj bi'l-Ghidhā*' with examples of two diseases: obesity and tuberculosis. He emphasized the fact that *Ghidhā*' can be preventive, promotive and curative.

Dr. Khalid Zaffar Masoodi delivered his presentation on 'Medicinal Plants with Dietary Value – An Evidence-based Approach' and talked about shifting food habits and how it can cause various diseases like diabetes and obesity. He also spoke about prostate cancer and modifying the old therapies, gene discovery and drug discovery against prostate cancer.

Scientific Session-V

Scientific Session-V was held on 'Lessons Learned during Pandemic'. The session was chaired by **Dr. Mohan Singh**, Director, Indian Systems of Medicine (Ayush), J&K and **Prof. Irshad A. Nawchoo**, Dean Research, University of Kashmir, Srinagar. **Prof. Imamuddin Ahmad**, Former Principal, Government Unani Medical College, Chennai, **Dr. Yasir Ahmad Rather**, Professor, Government Psychiatry Hospital, Srinagar, **Dr. Mushtaq Ahmed**, Divisional Nodal Officer, Ayush Health & Wellness Centres, Kashmir Division and **Dr. Iftikhar Hussain Gazi**, Medical Superintendent, Kashmir Tibbia College & Hospital & Research Centre, Sumbul, J&K were speakers of the session. The session focused on diet, nutrition, Unani drugs and Ayush interventions in the management of COVID-19. The topics highlighted during the session were 'Post COVID-19 Complications and Care in Unani Medicine', 'Taking Care of Mental Health during



Chairpersons and speakers of Scientific Session-IV on 'Diet and Nutrition – An Important Component for Improving Immunity in Unani Medicine'.



Chairpersons and speakers of Scientific Session-V themed on 'Lessons Learned during Pandemic'.

and after COVID-19', 'Role of 'Ilaj bi'l-Ghidhā' in the Management of COVID-19' and 'Ayush Interventions in the Management of COVID-19 – Experiences from Field'. The speakers emphasized the use of compatible and appropriate diet to avoid diseases especially non-communicable and life style disorders. Some speakers highlighted the significance of six essential factors (*Asbāb Sitta Darūriyya*) of life in the maintenance of health and prevention of diseases.

Scientific Session-VI

Scientific Session-VI themed on 'Achieving Good Health and Well-being SDG-3' was chaired by Prof. Geer Mohammad Ishaq, Department of Pharmaceutical Sciences, University of Kashmir, Srinagar and Dr. Manzoor Shah, Professor, Department of Botany, University of Kashmir, Srinagar. Dr. Poonam Sharma, Associate Professor, Division of Food Science

and Technology, SKUAST-Kashmir, Srinagar and Dr. Ajaz Hasan Ganai, Department of Botany, University of Kashmir, Kargil Campus, Laddakh delivered their presentations on 'Role of Nutrition in Maintaining Health' and 'Traditional Medicinal Plants of Kashmir Himalayas – Diversity & Prospects'.

Dr. Poonam Sharma discussed the role of nutrition (proteins,

vitamins, fats, carbohydrates, etc.) in body growth and how it provides resistance to infection and prevents certain diseases like diabetes, obesity and cardiovascular diseases.

Dr. Ajaz Hasan Ganai shared information about the medicinal plants in Kashmir Himalayas and some diets like *Qahwa*, *Khambir*, *Araq-i-Banafsha*, *Murabba Behi*, etc. having plants and fruits of medicinal benefits in treating various respiratory ailments.

Scientific Session-VII

'Traditional Systems of Medicine for Non-communicable Diseases (NCDs)' was the theme of Scientific Session-VII which was chaired by Prof. Zulfiqar Ali Bhatt, Former Head, Department of Pharmaceutical Sciences, University of Kashmir, Srinagar and Prof. Mubashir Hussain Masoodi, Head, Department of Pharmaceutical



Prof. Geer Mohammad Ishaq and Dr. Manzoor Shah, University of Kashmir, Srinagar chairing Scientific Session-VI.

Sciences, University of Kashmir, Srinagar. **Prof. Mohd. Idris**, Ayurvedic & Unani Tibbia College, New Delhi, **Dr. Inaamul Haq**, Assistant Professor, Government Medical College, Srinagar, **Dr. Irfan Banday**, Senior Medical Officer (Unani), Directorate of Ayush, Jammu & Kashmir and **Prof. S. M. Arif Zaidi**, Dean, School of Unani Medical Education & Research, Jamia Hamdard, New Delhi were speakers of the session.

In his presentation on 'Experience Sharing during COVID-19 Pandemic', **Prof. Mohd. Idris** discussed the role of his college in dealing with the pandemic of Influenza in 1918 and his personal experiences of dealing with COVID-19 pandemic. He also discussed some long-term and common post COVID-19 symptoms like fatigue, shortness of breath and cognitive dysfunction.

Dr. Inaamul Haq spoke on 'Environmental Risks and Non-communicable Diseases'. He

discussed various risk factors of non-communicable diseases and said that 23 percent of the global deaths are linked to the environmental risk factors, 15 percent of ischemic heart diseases are attributed to household air pollution, another 15 percent to ambient air pollution and 3 percent and 2 percent to second hand tobacco smoke and lead, respectively. He concluded with examples of interventions to reduce environmental risks to NCDs.

Dr. Irfan Banday delivered his presentation on 'Role of Unani Medicine in Combating NCDs'. He presented preventive measures of Unani Medicine and emphasized ABCDE strategy, viz. avoid alcohol, be physically active, cut down on salt and sugar, don't use tobacco products, and eat plenty of vegetables and fruits.

In his presentation on 'Dietary Recommendations in Metabolic Disorders', **Prof. S. M. Arif Zaidi** briefed the burden of malnutrition and metabolic disorders and

presented the role of diet in their treatment. He also explained the components of good health and lifestyle that can be controlled through nutritious diet, physical activity, behavioral modifications, etc.

Scientific Session-VIII

Scientific Session-VIII themed on 'Health & Wellness' was chaired by **Prof. Geer Mohammad Ishaq**, Department of Pharmaceutical Sciences, University of Kashmir, Srinagar and **Prof. Bashir Ganai**, Former Director, CORD, University of Kashmir, Srinagar. **Dr. S. M. Salim Khan**, Department of Social and Preventive Medicine, Government Medical College, Srinagar, **Prof. E. S. Sherani**, Dean, Ajmal Khan Tibbiya College, AMU, Aligarh, **Dr. Shazia Banday**, Medical Officer, Directorate of Ayush, J&K and **Dr. Shazia Noor**, Principal, Kashmir Tibbiya College and Hospital and Research Centre, Sumbul, J&K were speakers of the session. They delivered their addresses on 'Preventive Medicine for Maintenance of Health', 'Asbāb Sitta Ḍarūriyya in Modern Perspective', 'Unani Medicine for General Well-being' and 'Prospects of Medical Tourism in Unani Medicine in Kashmir', respectively.

Dr. S. M. Salim Khan explained the concept of maintenance of good health and different types of prevention. He emphasized the need for promotion of health education



Chairpersons and speakers of Scientific Session-VII themed on 'Traditional Systems of Medicine for Non-communicable Diseases (NCDs)'.



Chairpersons and speakers of Scientific Session-VIII themed on 'Health & Wellness'.

and maintaining the emotional, social, physical and mental health by health counselling.

Dr. F. S. Sherani discussed the relevance of emotional understanding with reference to *Asbāb Sitta Darūriyya* and focused

on doctor-patient relationship in clinic as well as on holistic approach to treat the disease.

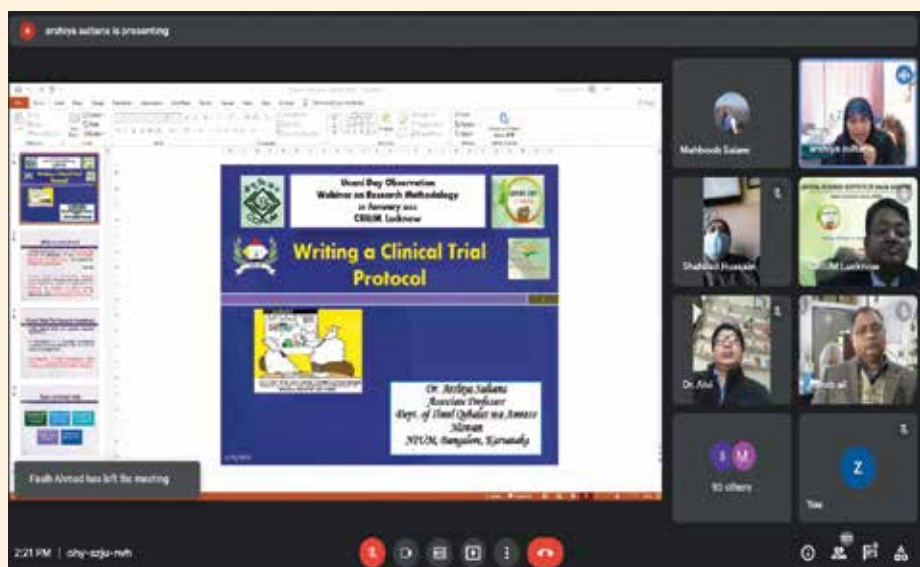
Dr. Shazia Banday discussed Unani Medicine as a comprehensive medical system providing promotive, preventive, curative and

rehabilitative health care for general well-being with a holistic approach considering each individual in relation to his/her environment and emphasizing the health of body, mind and soul.

Dr. Shazia Noor said that Kashmir is the paradise on the earth and has rich tradition of Unani medical practices. He added that with the scenic beauty, Kashmir is blessed with lush green meadows, flowing water resources and moderate temperature that provide a natural atmosphere for a patient to feel healthy and that the valley has great potential for Unani Medicine in medical tourism. ●●●

CRIUM, Lucknow Organises Webinar on Research Methodology

As a pre-activity to mark Unani Day 2022, the Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Lucknow organized a webinar on 'Research Methodology' on January 20, 2022.



Dr. Arshiya Sultana, Associate Professor, Department of Ilmul Qabalat wa Amraz-e-Niswan, National Institute of Unani Medicine (NIUM), Bengaluru delivered a detailed talk on 'Writing of clinical trial protocol'. Dr. Vahab Ali, Scientist G, ICMR-Rajendra Memorial Research Institute of Medical Sciences, Patna delivered his presentation on 'Ethics in research and publication'.

The webinar started with introductory remarks by Dr. Mohammad Nafees Khan, Deputy Director, CRIUM, Lucknow. Dr. Mahboobus Salam conducted the proceedings and Dr. Najmus Sehar proposed vote of thanks. More than a 100 participants attended the webinar. ●●●

CCRUM Develops Apps for Drugs, Treatment and Temperament

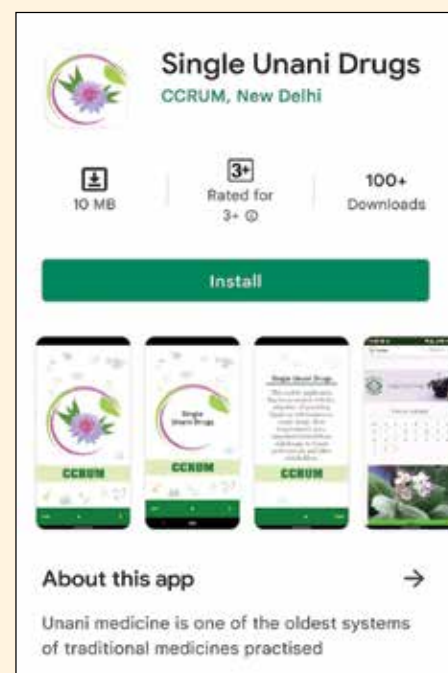
The CCRUM recently developed three applications for single Unani drugs, treatment guidelines and temperament in order to keep vital information handy for Unani medical practitioners and other stakeholders. The apps were launched during the inaugural function of Unani Day Celebration and International Conference on Unani Medicine at Sher-i-Kashmir International Conference Centre (SKICC), Srinagar on March 10, 2022.

The first mobile app 'Single Unani Drugs' contains details of single drugs of Unani Medicine. Considering the fact that the selection of drugs for treatment is governed by the their temperament, actions, and type of the disease, information pertaining to the temperament, uses, important formulations and dosage of the drugs has been included in the app.

The second app 'Unani Treatment Guidelines' is based on

'Standard Unani Treatment Guidelines for Common Diseases', a CCRUM publication in two volumes. It provides information related to treatment of common diseases that a physician comes across during clinical practice. It contains details about the principles of treatment, pharmacotherapy through single and compound drugs, regimenal therapy, dietary recommendations and restrictions and preventions/precautions related to the disease.

'Know Your Temperament' is a web-based tool for assessment of temperament, the most important principle of Unani Medicine. Through a simple quiz, the application facilitates identification of proper diet for maintaining the healthy temperament of a human being and reversing the abnormal temperament to the



normal using drugs and diets of opposite temperament.

While the mobile applications are available on Google Play Store and Apple App Store, the web application can be accessed from <https://unanitemperament.ccrumapps.in>

National Seminar on IPR

The CCRUM organized a national seminar on 'Intellectual Property Rights (IPR)' at its Chennai-based Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM) on March 30, 2022. Prof. Mohammad Afshar Alam, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi addressed the seminar as the chief guest.

the seminar, Prof. Khan said that it is a continuum of our efforts to train researchers, academicians and other stakeholders about intellectual prosperity rights. He informed that the CCRUM has already obtained 17 patents on its intellectual property



Distinguished speakers during National Anthem in National Seminar on 'Intellectual Property Rights (IPR)' on March 30, 2022.

Speaking on the occasion, Prof. Mohammad Afshar Alam said, 'Unani Medicine is flourishing well in India and it is satisfying that we are partners in the development of this medical system'. He further said that the CCRUM is the apex body for research and development in Unani Medicine and we have signed an MoU with the CCRUM to extend our contributions to the cause. Speaking about the theme of the seminar, he said that creation of IPR is very important for the progression of science and economic prosperity.

In his presidential address, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM said that the Government of India under the dynamic leadership of Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi has been providing

increasing patronage and funds for multifaceted development of Unani Medicine as well as other Indian systems of medicine. Prof. Khan informed that the CCRUM has been making concerted efforts for setting up standards for research, training and practice of Unani Medicine and has obtained NABH accreditation for National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders (NRIUMSD), Hyderabad and RRIUM, Srinagar and efforts are on for accreditation of other healthcare facilities under the CCRUM. He apprised that the WHO in collaboration with the Ministry of Ayush has recently published 'WHO Benchmarks for the Training of Unani Medicine' and 'WHO Benchmarks for the Practice of Unani Medicine'. Speaking about

rights and more are in pipeline.

Shri S. Thangapandian, Deputy Controller of Patents and Design, Indian Patent Office, Chennai and Prof. Abdul Wadud, Director, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru were guests of honour on the occasion and addressed the inaugural function of the seminar.

Earlier, Dr. N. Zaheer Ahmed, Deputy Director, RRIUM, Chennai delivered welcome address and spoke about the background the seminar.

The seminar had three technical sessions including a panel discussion, wherein eminent speakers articulated the intellectual property rights with focus on herbal drugs and products.



DG, CCRUM Addresses Training Programme on Traditional Medicine

Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM delivered a keynote address in a training programme on 'Traditional Medicine-Modern Approaches for Affordable and Accessible Healthcare' organized by Amity University, Noida, Uttar Pradesh during February 21–25, 2022.

Speaking on the second day of the 5-day training programme, Prof. Asim Ali Khan said that integrative healthcare approach based on Traditional Medicine and Allopathic Medicine can play an important role in the prevention and management of emerging health challenges. He further said that the integrative approach proved very helpful in dealing with the COVID-19 pandemic and carrying out research activities on the disease. Highlighting the significance of the theme, Prof. Khan said that an

inclusive approach based on the integration of the strengths of our traditional systems of medicine in the healthcare delivery system is a way forward to finding solutions for health challenges.

Further speaking in the panel discussion on 'Unani, Siddha and Homoeopathy: Reviving of Indian Roots', Prof. Khan said that Unani Medicine has made major advancements and successfully applied its principles to the Indian geo-human environment to emerge as one of the effective



Prof. Asim Ali Khan

and commonly used systems of medicine and an integral part of the national healthcare delivery. He further said that with the largest network of educational, healthcare and research and development establishments, India is the world leader in Unani Medicine.

The online training programme was sponsored by the Department of Science and Technology, Government of India under the 'National Program for Training of Scientists & Technologists Working in Government Sector'. ●●●

Webinar on Healthcare Standards

The Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), New Delhi organized a webinar on 'healthcare standards' on January 21, 2022 as a part of pre-activities of Unani Day 2022.

Dr. Vandana Siroha, Deputy Director, National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers (NABH) and Dr. Munawwar Husain Kazmi, Former Director, National Research Institute of Unani Medicine

for Skin Disorders, Hyderabad delivered their talks on 'healthcare standards and accreditation in Unani Medicine'.

The webinar started with introductory remarks by Dr. Rahat Raza, Deputy Director, RRIUM, New

Delhi. Dr. Shaista Urooj, Research Officer (Unani), RRIUM, New Delhi conducted the proceedings of the webinar which was attended by a hundred participants comprising researchers and scientists.

The webinar concluded with vote of thanks proposed by Dr. Abdul Raheem, Research Officer (Unani) Scientist-IV and Incharge, Unani Medical Centre, Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi. ●●●

Webinar on ‘Bio-ethics with Emphasis on GCP Guidelines’

The CCRUM through its Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Chennai organized a webinar on ‘Bioethics with Emphasis on GCP Guidelines’ on February 05, 2022. The webinar was organized as a part of pre-activities of Unani Day 2022.

Speaking on the occasion, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM emphasized the importance and significance of bioethics for research and development activities. He also highlighted the activities and contributions of the CCRUM and its peripheral institutes with regard to the development of safe and quality healthcare culture

in Unani hospitals and research organizations across the country.

Addressing the webinar, Dr. Nandini K. Kumar, formerly Deputy Director General, Indian Council of Medical Research (ICMR) and Vice President, Forum of Ethical Review Committees in India highlighted ethical issues arising during medical practice as well as biasness and

discrepancies while publishing research articles.

Prof. Abdul Wadud, Director, National Institute of Unani Medicine (NIUM), Bengaluru underscored the historical aspects of bioethics in Unani Medicine and ancient civilizations and highlighted its importance in the current scenario.

The webinar had lectures and presentations in two technical sessions on the basic ethical principles of biomedical research as reflected in GCP guidelines impacting on the role and responsibilities of each stakeholder. Dr. Jugal Kishore, Head, Department of Community Medicine, Safdarjung Hospital, New Delhi, Dr. G. Narendran, Scientist-E, ICMR-National Institute of Research in Tuberculosis (NIRT), Chennai, Prof. Mohd Aleemuddin Quamri, Head, Department of *Amraze Jild wa Tazyeeniyat*, NIUM, Bengaluru, Dr. Bano Rekha, Scientist-E, ICMR-NIRT, Chennai, Dr. Melvin George, Associate Professor, SRM Medical College Hospital & Research Centre, Chennai and Dr. C. Ponnuraja, Scientist-E, ICMR-NIRT, Chennai were speakers of the webinar.

Dr. N. Zaheer Ahmed, Deputy Director, RRIUM, Chennai and his team comprising Dr. T. Shahida Begum, Dr. Noman Anwar and others organized and managed the proceedings of the webinar.

Researchers from CCRUM and other institutions participated in the webinar in large number. ●●●



A snap of speakers and participants of ‘Webinar on Bioethics with Emphasis on GCP Guidelines’ organized by RRIUM, Chennai on February 05, 2022.

Seminar on Mental Health

The Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai, a peripheral institute of the CCRUM, organised a national seminar on mental health on February 08, 2022 in hybrid mode. The seminar was themed on 'Opening doors to quality mental health care through Unani system of medicine'.



Speakers of National Seminar on Mental Health organized by RRIUM, Mumbai on February 08, 2022 in hybrid mode.

Addressing the seminar, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM emphasized the need to address the silent pandemic of mental illness which has been accentuated by the COVID-19 pandemic. He urged to plan research activities of various institutes under the CCRUM in such a way that

Unani Medicine may become a major contributor for awareness and upkeep of mental health. He said that mental health is the national priority today; hence, there cannot be a better time for Unani Medicine to explore its potential in this field and deliver comprehensive mental health care regimens.

Dr. Nirmala Devi, Research Officer Incharge, RRIUM, Mumbai stressed the need for collective efforts from all medical systems to deliver integrated mental healthcare management system for alleviating the turmoil faced by those suffering from any sort of mental illness.

Dr. Varsha Dawani, Chief Psychiatrist, Central Hospital, Mumbai, Dr. Archana Gadkari, Head, Department of Psychiatry, Central Hospital, Mumbai and Dr. Isa Nadvi, Professor, Dr. M. I. J. Tibbia Unani Medical College, Mumbai were speakers of the seminar.

Poster and paper presentations by researchers gave the program a further scientific touch and highlighted the research work of the CCRUM in the field of mental health.

Dr. Humaira Bano, Dr. Nikhat Shaikh, Dr. Irfan Ahmed, Dr. Mohd. Adil and other officers of RRIUM, Mumbai organized and managed the proceedings of the seminar.



Webinar on Managerial Effectiveness

The Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai organised a national webinar on 'Introduction to Managerial Effectiveness' on January 28, 2022. It was organized as a pre-activity to mark Unani Day 2022.

Colonel Naresh Rajendra Sinha, Coach for Managerial & Leadership

Skills delivered a very informative lecture on capacity building, skill

development and managerial effectiveness.

Dr. Nirmala Devi, Research Officer Incharge, RRIUM, Mumbai chaired the webinar which was attended by more than 100 participants from different walks of life. Dr. Nikhat Shaikh, Research Officer (Unani), RRIUM, Mumbai coordinated the proceedings of the webinar.



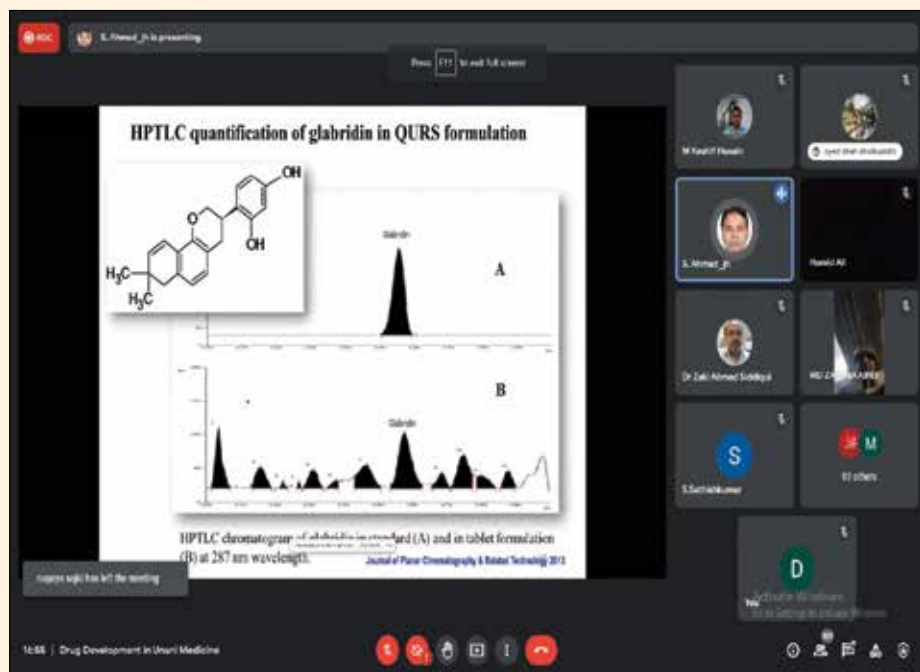
Webinar on Drug Development

The CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Chennai organized a national webinar on 'Drug Development in Unani Medicine' on January 27, 2022 as part of pre-activities of Unani Day 2022.

The webinar aimed at exploring the scope and challenges of Unani drug development and enabling the participants to upscale their knowledge about novel drug discovery, phases of clinical trials and regulatory issues that arise during drug discovery and development.

Prof. K. M. Y. Amin, Aligarh Muslim University, Aligarh delivered a comprehensive talk on 'Drug Development in Unani Medicine – Scope and Challenges', whereas Dr. Sayeed Ahmad, Jamia Hamdard, New Delhi highlighted 'Regulatory Issues in Drug Development'.

The webinar was very successful in terms of content and deliberations. About 250 delegates from various Ayush institutions attended the webinar with great zeal and enthusiasm.



Webinar on Lifestyle at RRIUM, Aligarh

The Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Aligarh organized a webinar on 'lifestyle' on January 5, 2022 to raise awareness about the impact of way of living on physical and mental health.

Dr. Asia Sultana, Department of Ilaj-bit-Tadbeer, Aligarh Muslim University, Aligarh as the resource person of the webinar delivered an extensive talk on healthy lifestyle as advocated in Unani Medicine.

The webinar started with welcome address by Dr. Sheereen Afza, Research Officer Incharge, RRIUM, Aligarh. Dr. Parvez Khan, Dr. Rashidul Islam Ansari, Dr. Sada Akhtar, Dr. Sajid Aqeel and other officers from the RRIUM and about 100 participants attended the webinar.



Dr. Munawwar Kazmi Joins Hamdard University Bangladesh as Unani Academic Chair

Dr. Munawwar Husain Kazmi, Former Director, National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders (NRIUMSD), Hyderabad joined Hamdard University Bangladesh as Academic Chair in Unani Medicine on March 31, 2022.

primarily by demonstrating and fostering excellence in teaching, research and policy development related to Unani Medicine. The Academic Chair would also explore opportunities for collaborative research, formulate strategies for dissemination of results of completed studies, act as a credible source of information about



Vice Chancellor, Registrar, faculty members and officers of Hamdard University Bangladesh welcoming Dr. Munawwar Husain Kazmi as Unani Academic Chair in the university on March 31, 2022.

This comes as an important step in the cooperation and collaboration between the Central Council for Research in Unani Medicine, Ministry of Ayush, Government of India and Hamdard University Bangladesh in the area of research and development in Unani Medicine following the Memorandum of Understanding (MoU) between the two organizations in 2018. Under this MoU, Dr. Anil Khurana, Director General Incharge, CCRUM and Prof. Md. Abdul Mannan, Vice

Chancellor, Hamdard University, Bangladesh had agreed to establish an Academic Chair for Unani Medicine at the Faculty of Unani and Ayurvedic Medicine and Surgery of the university.

As per the mandate of the MoU, Dr. Kazmi would undertake academic and research activities, design academic standards and short/medium term courses, promote research activities and innovations and provide academic leadership to the institution

Unani Medicine in Bangladesh and conduct workshops/seminars/conferences.

Dr. Kazmi was warmly welcomed by Prof. Abul Khair, Vice-Chancellor, Dr. Md. Moazzam Hossain, Registrar, Dr. Khairul Alam, Head, Unani Medicine and Surgery, Dr. Meer Mohammad Azad, Head, Department of Ayurvedic Medicine and Surgery and other faculty members and officers of Hamdard University Bangladesh.



CCRUM Releases Eight Publications

Shri Sarbananda Sonowal, Hon'ble Cabinet Minister, Ministry of Ayush and Ministry of Ports, Shipping & Waterways, Government of India released eight publications brought out by the Central Council for Research in Unani Medicine during the Inaugural Session of Unani Day Celebration and International Conference on Unani Medicine at Sher-i-Kashmir International Conference Centre (SKICC), Srinagar on March 10, 2022.

Dr. Munjpara Mahendrabhai Kalubhai, Hon'ble Minister of State, Ministry of Ayush and Ministry of Women & Child Development, Government of India, Shri Pramod Kumar Pathak, Special Secretary, Ministry of Ayush, Government of India, Shri Vivek Bhardwaj, Additional Chief Secretary, Health & Medical Education Department, J&K, Vaidya Jayant Deopujari, Chairman, National Commission for India System of Medicine, New Delhi, Prof. Talat Ahmad, Vice Chancellor, University of Kashmir, Srinagar, Prof. Akbar Masood, Vice Chancellor, Baba Ghulam Shah Badshah University, Rajouri, Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM and Dr. M. A.

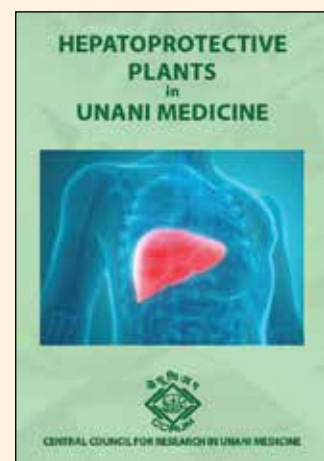
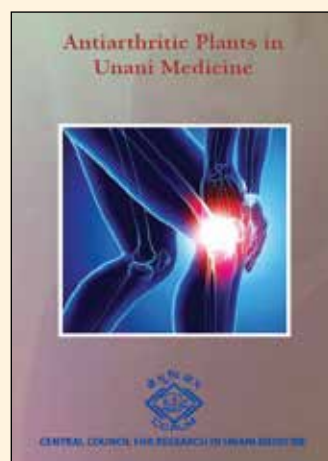
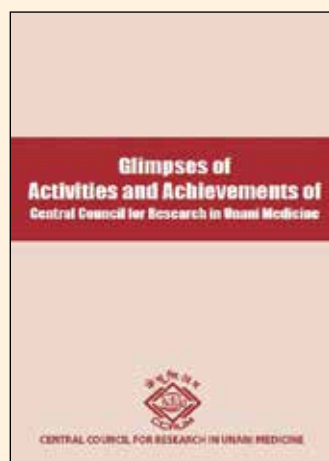
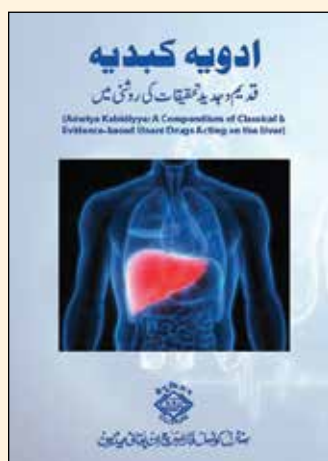
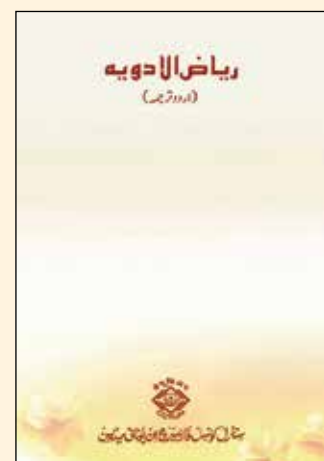
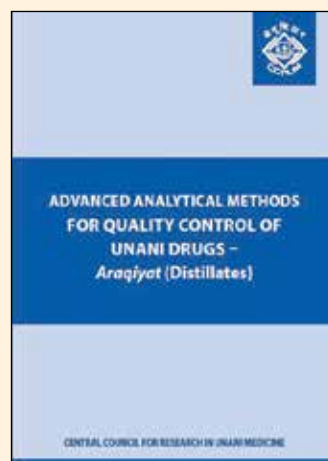
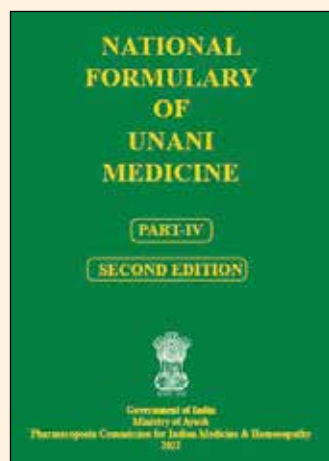
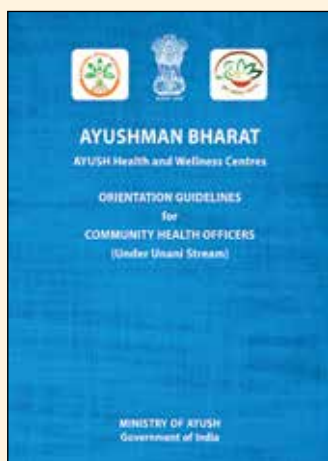
Qasmi, Adviser (Unani), Ministry of Ayush, Government of India also participated in the release.

The titles of the books released include 'Orientation Guidelines for Community Health Officers (Under Unani Stream)', 'National Formulary of Unani Medicine, Part-IV, 2nd Edition', 'Advanced Analytical Methods for Quality Control of Unani Drugs – *Araqiyat* (Distillates)', '*Riyad al-Adwiya*', '*Adwiya Kabidiyya: Qadeem-o-Jadeed Tahqiqat ki Raushni mein*', 'Glimpses of Activities and Achievements of Central Council for Research in Unani Medicine', 'Antiarthritic Plants in Unani Medicine' and 'Hepatoprotective Plants in Unani Medicine'.

'Orientation Guidelines for Community Health Officers (Under Unani Stream)' comprises operational guidelines for Community Health Officers (under Unani Stream) working at Ayush Health and Wellness Centres established under Ayushman Bharat Scheme of Government of India. It provides an initial structure for capacity building of Community Health Officers and their teams, comprehensive information on different activities to be undertaken at Ayush Health and Wellness Centres and description of practices for promotion of health, prevention and control of diseases through Unani measures and interventions. These guidelines provide primary



Hon'ble Ministers Shri Sarbananda Sonowal and Dr. Munjpara Mahendrabhai and other dignitaries releasing a CCRUM publication during International Conference on Unani Medicine in Srinagar on March 10, 2022.



interventions in each of 12 service delivery frameworks, focusing on healthy practices to be followed on daily basis for preservation of health, and prevention and control of disease.

‘National Formulary of Unani Medicine, Part-IV (2nd Edition)’ is the revised edition of National Formulary of Unani Medicine, Part-IV, first published in 2006. An official document on Unani formulations, the volume covers description of 166 Unani formulations in 7 different dosage forms. The key feature of this revised edition is the incorporation of modern

manufacturing advancements in the field of Unani pharmacy.

‘Advanced Analytical Methods for Quality Control of Unani Drugs – Araqiyyat (Distillates)’ encompasses detailed quality control studies of Araqiyyat mentioned in Unani Pharmacopoeia of India. The book consists of eight chapters covering quality control analysis of 10 Araqiyyat, namely *Araq-i-Ajeeb*, *Araq-i-Ajwayin*, *Araq-i-Badiyan*, *Araq-i-Birinjasif*, *Araq-i-Gazar Sada*, *Araq-i-Gulab*, *Araq-i-Kasni*, *Araq-i-Keora*, *Araq-i-Mako* and *Araq-i-Na’na*. Chapter 1 of the book presents a brief introduction of

Araqiyat and different methods of their preparation, while chapter 2 covers pharmacopoeial description and method of preparation of the selected *Araqiyat* and their basic quality control parameters. Chapters 3 and 4 present quality control analysis of *Araqiyat* using HPTLC and GC-MS, whereas chapters 5, 6 and 7 are based on stability testing, pharmacokinetics and pattern recognition analysis, respectively. The last chapter discusses safety, efficacy and toxicity issues associated with *Araqiyat*.

‘*Riyad al-Adwiya*’ (Urdu translation) is an important Persian

treatise by Yusuf bin Muhammad bin Yusuf, a 16th century Unani physician, on Unani single and compound drugs. It presents brief description of very important aspects of hundreds of Unani drugs. Easy availability in respect of single drugs and simplicity of pharmaceutical process in respect of formulations have been considered in their selection.

‘Adwiya Kabidiyya: Qadeem-o-Jadeed Tahqiqat ki Raushni mein’ is a compendium of classical and evidence-based Unani drugs acting on the liver in Urdu language. The compendium provides an account of Unani drugs useful in protection of the liver and treatment of its diseases. It presents time-tested Unani prescriptions, useful Unani single drugs and classical formulations for liver diseases and evidence-based Unani single and

compound drugs acting on the liver. The compilation is the outcome of a literary research project of the CCRUM.

‘Glimpses of Activities and Achievements of Central Council for Research in Unani Medicine’ introduces Unani Medicine and outlines an overview of the CCRUM, its institutional network and infrastructure, activities and research programmes, achievements, recent developments and initiatives as well as important events. It also details the important role of the CCRUM during the times of COVID-19 pandemic.

‘Antiarthritic Plants in Unani Medicine’ comprises description of some medicinal plants used for the management of arthritis in Unani Medicine along with their botanical description, part used, temperament, method of

use, dosage and their important formulations. The publication also includes references of scientific studies carried out for establishing anti-arthritic, analgesic and anti-inflammatory effects of Unani single drugs.

‘Hepatoprotective Plants in Unani Medicine’ contains details of some important hepatoprotective plants described in the literature of Unani Medicine. It carries information about the botanical description of the plants, part used, temperament, method of use, dosage and their important formulations used in the treatment of liver diseases. Important constituents and studies conducted on these plants particularly those substantiating their hepatoprotective properties have also been mentioned in the publication.



NRIUMSD Organises Webinar on Unani Medicine

The National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders (NRIUMSD), Hyderabad organized a webinar on **‘Fundamental Aspects of Unani Medicine’** on January 31, 2022.

Prof. Dr. Ghulamuddin Sofi, Head, Department of Ilmul Advia and Dr. Wasim Ahmad, Assistant Professor, Department of Kulliyat, National Institute of Unani Medicine (NIUM), Bengaluru delivered invited talks on ‘Understanding Basic Principles of Unani Medicine’ and ‘Hypertension in the Viewpoint of Unani System of Medicine – An

Interpretation’. In his opening remarks, Dr. Ahmed Minhajuddin, Director Incharge, NRIUMSD, Hyderabad accentuated the importance of understanding the fundamentals of Unani Medicine. The webinar concluded with the vote of thanks presented by Dr. Anwar Ahmad, Research Officer (Unani) Scientist-IV, NRIUMSD.



UNANI DAY 2022
You are cordially invited to attend the National webinar on
‘Fundamental Aspects of Unani Medicine’
Date: 31 January, 2022 Time: 02.30PM onwards

Patron
Prof. Jatin Ali Khan
Director General CCRUM &
Advisor (Unani), Ministry of AYUSH
Govt of India

Organizing Chairperson
Dr. Ahmed Minhajuddin
Director I/C NRIUMSD Hyderabad
CCRUM, Ministry of AYUSH
Govt of India

Guest speakers

Dr. Ghulamuddin Sofi
Professor
Department of Ilmul Advia
National Institute of Unani Medicine,
Bengaluru
Topic: Understanding Basic
principles of Unani medicine
with their importance for
India

Dr. Wasim Ahmad
Assistant Professor
Department of Kulliyat Tibb
National Institute of Unani Medicine,
Bengaluru
Topic: Hypertension in the
viewpoint of Unani system of
medicine – An Interpretation

Webinar link: meet.google.com/vrf-xmyk-gch?hs=224

Organised by
National Research Institute of Unani Medicine for Skin Disorders
Hyderabad, CCRUM, Ministry of AYUSH, Govt. India

CCRUM Organises Webinar on Pharmacovigilance

The CCRUM through its Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai organized a webinar on 'Pharmacovigilance Programme of ASU&H Drugs' on March 16, 2022. The webinar aimed to create awareness about pharmacovigilance and inculcate the habit of reporting adverse drug reactions among Ayush professionals and other stakeholders.



A snap of speakers, organizers and participants of Webinar on Pharmacovigilance Programme of ASU&H Drugs' held on March 16, 2022.

Speaking on the occasion, Dr. N. Zaheer Ahmed, Deputy Director, RRIUM, Chennai presented basic information and introduction of pharmacovigilance. He also elaborated on the scope and key functionality of peripheral pharmacovigilance centres of CCRUM.

Dr. Humaira Bano, Research Officer (Unani), RRIUM, Mumbai and Dr. Mohd Aleemuddin Quamri, National Institute of Unani Medicine, Bengaluru delivered their

lectures on 'Pharmacovigilance of Ayush drugs – An appraisal' and 'Importance of forms of drugs in Unani system of medicine in perspective of pharmacovigilance', respectively.

Earlier, Dr. Nirmala Devi, Research Officer Incharge, RRIUM, Mumbai highlighted the aims and objectives of the webinar. Dr. Nikhat Shaikh, Research Officer (Unani), RRIUM, Mumbai presented vote of thanks.

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter is a quarterly official bulletin of the Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of the Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is published bilingually in Hindi and English and contains news chiefly about the works and activities of the CCRUM. It is free of charge to individuals as well as to organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the bulletin may be reproduced provided credit is given to the CCRUM Newsletter and such reproduction is not used for commercial purposes.

Editor-in-Chief

Asim Ali Khan

Executive Editor

Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board

Naheed Parveen

Ghazala Javed

Jamal Akhtar

Shabnam Siddiqui

Editorial Office

CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE

61-65, Institutional Area,
Janakpuri, New Delhi - 110 058

Telephone : +91-11-28521981, 28525982

Fax : +91-11-28522965

E-mail: unanimedicine@gmail.com

rop.ccrum@gmail.com

Website: <https://ccrum.res.in>

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla
Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020